॥ श्री ॥

अथ अनुक्रमणिका

॥ मंगलाचरणम् ॥

। दोहा ।

ॐ नमो अरिहन्त सिद्ध आचारज उवझाय ।
साधु सकल के चरणकूं वन्दू शीश नमाय ॥ १ ॥
महा मन्त्र ए शुद्ध जपूं प्रात समय सुखकार ।
विघन मिटे संकट कटै वरतै जय जयकार ॥ २ ॥
सुमरूं श्रीभिक्षु गुरु प्रबल बुद्धि भण्डार ।
तासु प्रसादे पामियै समकित रतन उदार ॥ ३ ॥

ढाल (बाल नाटक की)

सुण प्यारे तूं प्यारे आत्मा डाल नगिन्द गुन गारे । ए देशी ॥
सूत्रन का पूरवन का प्यारे पढ़ो ज्ञान श्री जिन का । आंकड़ी ।

जिन पढ़ियां अघ घडिया टोला, फुन पसु सम घन वन का ॥ प्यारे पढ़ो ज्ञान श्री जिन का ॥ १ ॥

सम्यक् ज्ञान पढ्यां थी प्रगटै, मिटै भ्रान्ति सब मन का ॥ प्यारे पढ़ो० ॥ २ ॥

तत्व पदारथ अर्थ ओलखै वागी होय शासन का ॥ प्यारे पढ़ो० ॥ ३ ॥

काल अनादि मिथ्यातम निसिवत् अब ज्ञानोदित दिन का ॥ प्यारे पढ़ो० ॥ ४ ॥

पाप पैल पक झेल ब्रत धणू, ये खिल खिल यवपन का प्यारे पढ़ो० ॥ ५ ॥

श्री कालू गणिराज प्रसादे (कहै) गुलाब जाय पायन का । प्यारे पढ़ो ज्ञान श्री जिन का ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीभिक्षु स्मरण ॥

दरिशन देख जीन को दीदार भयो राजा ॥ ए देशी ॥
श्री भिक्षु सुमरि भिक्षु सुमरि भिक्षु सुमरि भाई ॥
भिक्षु नाम ठाम २ सूत्र में कहाई । श्रीभिक्षु ॥ ए आंकड़ी ॥

पालै सुध संयम पाल । दोष बयालीस टाल ।
भिक्षा ले निरवद्य भाल । जिनन्द ऐ फरमाई । श्री ॥१॥
तेह भिक्षु नाम धार । पयतर ए पंचम आर ।
कुगुरु कुदेव टार । शिव राह को बताई । श्री ॥ २ ॥
दया अनुकम्पा ठीक । किया शिव गति नजीक ।
एह जिन धर्म-सीख न कर धुरताई । श्री ॥ ३ ॥
दया दया मुख पुकार । न कर हिंसा प्रचार ।
घर र राग मोह टार । आतम गुण जगाई । श्री ॥ ४ ॥
धर्म जिन आण मांय । कदापि न बाहर थाय ।
नर भव ए दुर्लभ पाय । समझ थी पढ़ाई । श्री ॥५॥
असंयम जीतव्य जोय । वांछियां किम धर्म होय ।
संयम सु मरण सोय । त्रिलोक्य में ठकुराई । श्री भिक्षु ॥ ६ ॥

ुपात्र कुरवत जेम । पोख्यां हुवे धर्म किम ।
ुपातसे राख पेम । निर्ट्र घण दहिराई ॥श्री भिक्षू॥७॥
आगम अमुल्य देख । इत्यादिक कह्यो लेख ।
व्रत धर्म अव्रत सेख । सुमग एह जताई ॥ श्री ॥ ८ ॥
ंच व्रत संयम भार । पालन पलावन उदार ।
देव गुरु धर्म सार । रत्न की सभाई ॥ श्री ॥ ९ ॥
शुद्ध हृदयवंत जेह । सुगुरु विनय करत तेह ।
अमंगल नहीं हो कदेह । सुफल हो पढ़ाई ॥ श्री ॥१०॥
समकित फरसे सताव । निज गुनकी बढ़े आव ।
भिक्षू नाम कहे गुलाब । संकट में सहाई ॥ श्री ॥११॥

॥ अथ तस्सुत्तरी ॥

तस्सुत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घाय णट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं, अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अङ्गसंचालेहिं, सुहुमेहिंखेलसंचालेहिं, सुहुमेहिंदिट्ठिसंचालेहिं, एव माइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिउ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहन्ताणं, भगवंताणं नमोकारेणं, नपारेमि, तावकायं, ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

ध्यानमें । इच्छामि पडिक्कमिउ की पाटी मनमें गुणकर एक नमोकारगुण के पारलेवो ।

॥ अथ लोगस्स की पाटी ॥

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरेजिणे अरिहन्ते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजीयं च वंदे, संभव मभिणंदणं च, सुमइं च पउमप्पहंसुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ।२। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंस वासुपुज्जंच, विमलमणंतंच जिणं, धम्मं

मणंत मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नाम-धेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं ।

॥ सामायक पारनेकी पाटी ॥

नवमा सामायक विरमण व्रत के विषे ज्यो कोई अतीचार दोष लागोहुवे ते आलोऊं सामयक अणपूरी पारी होय, पारवो विसार्यो होय मन वचन काया का जोग माठा प्रवरताया होय सामायक में राज कथा देश कथा स्त्री कथा भत्त कथा करी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

अथ तिख्खुत्ताकी पाटी ।

तिक्खुत्तो आयाहीणं पयाहीणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थेण वंदामि ।

अथ पंचपद वंदणा ।

पहिले पद श्री सीमंधर स्वामी आदि देई जघन्य २० (वीस) तीर्थंकर देवाधिदेवजी उत्कृष्टा १६० (एकसहसाठ) तीर्थंकर देवाधिदेवजी पंचमहाविदेह क्षेत्रांके विषे विचरैहै अनन्त ज्ञान का धर्णी अनन्त दर्शनका धर्णी अनन्त बलका धणी एक हजार आठ लक्षणांका धारणहार चौसठ इन्द्रांका पूजनीक,

चोतीस अतिसय, पैंतिस वाणी, द्वादस गुण सहित विराजमान छे ज्यां अरिहन्ता से मांहरी वंदना तिख्खुत्ता का पाठ से मालुम होज्यो ।

दूजे पद अनन्तासिद्ध पंदरा भेदे अनन्ती चोवीसी मोक्ष पहुंता तिहां जनम नहीं जरा नहीं रोग नहीं सोग नहीं मरण नहीं भय नहीं संयोग नहीं वियोग नहीं दुःख नहीं दारिद्र नहीं फिर पाछा गर्भावासमें आवे नहीं इसा उत्तम सिद्ध भगवंतांसे मांहरी वन्दना तिख्खुत्ताका पाठ से मालुम होज्यो ।

तीजे पद जघन्य दोय कोड़ केवली उत्कृष्टा नव कोड़ केवली पन्नमहाविदेह क्षेत्रांमें विचरे छै केवल ज्ञान केवल दर्शणका धारक लोकालोक प्रकाशक सर्व द्रव्य क्षेत्र काल भाव जाण देखे छे ज्यां केवली जी से मांहरी वन्दना तिख्खुत्ताका पाठसे मालुम होज्यो ।

चौथे पद गणधरजी आचार्यजी उपाध्यायजी स्थविरजी ए गणधरजी महाराज किसाक अनेक गुणां विराजमान छे आचार्यजी महाराज किसा छे छतिस गुणां विराजमान छे उपाध्यायजी महाराज किसाक पचीस गुणां विराजमान छे स्थविरजी महाराज किसाक धर्म से डिगता जुवा प्राणी ने स्थिर करे वांने गुण

आचार पाले पलावे ज्यां उत्तम पुरुषां से मांहरी वन्दना तिक्खुत्ता का पाठसे मालुम होज्यो।

पञ्चमें पद मांहरा धर्म आचारज गुरु पुज्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्रीकालूरामजी स्वामी (वर्तमान आचारजको नाम लेणो) जघन्य दोय हजार कोड़ साधू साध्वी उत्कृष्टा नव हजार कोड़ साधू साध्वी अढ़ाई द्वीप पन्दरे खेतामें विचरेछे ते महा उत्तम पुरुष किहवाछे, पञ्च महाव्रतका पालणहार, छव काया ना पीहर, पञ्च सुमति सुमता, तीन गुप्ती गुप्ता, बारे भेदे तपस्या का करणहार, बावीस परीसहका जीतण-हार, बयालीस दोष टाल आहार पाणीका लेवणहार, बावन अनाचार का टालणहार, सतावीस गुण संयुक्त, निर्लोभी, निरलालची, सचित्तका त्यागी, अचित्त का भोगी, संसारसे पूठा, मोक्षमें स्हामा, अस्वादी, त्यागी, वैरागी, बृहिया आवै नहीं, नींतियां जीमै नहीं, बायरा नींपरै अप्रतिबन्धविहारी इसा महापुरुषांसे मांहरी वन्दना तिक्खुत्ताका पाठसे मालुम होज्यो।

॥ अथ चौरासी लाख योनि ॥

७ लाख पृथ्वीकाय ७ लाख अप्पकाय ७ लाख तेउकाय ७ लाख वायुकाय १० लाख प्रत्येक वनस्पति

काय १४ लाख साधारण वनस्पतिकाय २ लाख बेन्द्री २ लाख तेन्द्री २ लाख चौन्द्री ४ लाख नारकी ४ लाख देवता, ४ लाख तिर्यंच पंचेन्द्री, १४ लाख मनुष्य की जाति ए च्यार गति, चौरासी लाख जीवा योनि में बारम्बार भमता भामता होज्यो।

॥ अथ चौवीस तीर्थंकरांका नाम ॥

१ पहला श्रीऋषभनाथजी।
२ दूजा श्रीअजितनाथ स्वामीजी।
३ तीजा श्रीसम्भवनाथ स्वामीजी।
४ चौथा श्रीअभिनन्दननाथ स्वामीजी।
५ पांचवां श्रीसुमतिनाथ स्वामीजी।
६ छट्ठा श्री पद्मप्रभ स्वामीजी।
७ सातवां श्रीसुपारसनाथ स्वामीजी।
८ आठवां श्रीचंद्रप्रभ स्वामीजी।
९ नवमा श्रीसुविधिनाथ स्वामीजी।
१० दशवां श्रीशीतलनाथ स्वामीजी।

११ इग्यारमां श्रीश्रेयांसनाथ स्वामीजी।
१२ बारमां श्रीवासुपुज्यनाथ स्वामीजी।
१३ तेरमां श्रीविमलनाथ स्वामीजी।
१४ चौदमां श्रीअनन्तनाथ स्वामीजी।
१५ पंदरमां श्रीधर्मनाथ स्वामीजी।
१६ सोलमां श्रीशान्तिनाथ स्वामीजी।
१७ सतरमां श्रीकुंथुनाथ स्वामीजी।
१८ अठारमां श्रीअरनाथ स्वामीजी।
१९ उगणीसमां श्रीमल्लिनाथजी स्वामीजी।
२० वीसमा श्रीमुनि सुव्रतनाथ स्वामीजी।
२१ इकवीसमां श्रीनमिनाथ स्वामीजी।
२२ बावीसमां श्रीअरिष्ठनेमनाथ स्वामीजी।
२३ तेवीसमां श्रीपार्श्वनाथ स्वामीजी।
२४ चोवीसमां श्री वर्द्धमान स्वामीजी।

॥ पच्चीस बोल ॥

१ पहले बोले गति च्यार ४
नरकगति १ तिर्यञ्चगति २ मनुष्यगति ३
देवगति ४

२ दूजे बोले जाति ५
एकेन्द्री, बेइन्द्री, तेइन्द्री, चौइन्द्री, पंचेन्द्री.

सत्यमन जोग १ असत्यमन जोग २ मिश्रमन जोग
३ व्यवहार मन योग ४

४ च्यार वचनका
सत्य भाषा १ असत्य भाषा २ मिश्र भाषा ३
व्यवहार भाषा ४

७ कायाका
औदारिक १ औदारिक मिश्र २ वैक्रिय ३
वैक्रियको मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक मिश्र ६
कार्मण जोग ७

६ नवमे बोले उपयोग वारे १२
५ पांच ज्ञान
मति ज्ञान १ श्रुति ज्ञान २ अवधि ज्ञान ३ मन
पर्यव ज्ञान ५ केवल ज्ञान ५

३ तीन अज्ञान
मति अज्ञान १ श्रुति अज्ञान २ विभङ्ग अज्ञान
४ च्यार दर्शन
चक्षु दर्शन १ अचक्षु दर्शन २ अवधि दर्
३ केवल दर्शन ४

१० दशमे बोले कर्म आठ ८
ज्ञानावर्णी कर्म १ दर्शनावर्णी कर्म २

कर्म ३ मोहनीय कर्म ४ आयुष्य कर्म ५ ना
कर्म ६ गोत्र कर्म ७ अन्तराय कर्म ८

११ इग्यारमें बोले गुण स्थान चौदा १४

१ पहिलो मिथ्यात्व गुणस्थान
२ दूजो सस्वादन समदृष्टी गुणस्थान
३ तीजो मिश्र गुणस्थान
४ चौथो अव्रत समदृष्टी गुणस्थान
५ पांचमों देशव्रत श्रावक गुणस्थान
६ छठो प्रमादी साधू गुणस्थान
७ सातमों अप्रमादी साधू गुणस्थान
८ आठमों नियट्ट बादर गुणस्थान
९ नवमों अनियट्ट बादर गुणस्थान
१० दशमूं सुक्षम संपराय गुणस्थान
११ इग्यारमूं उपशान्त मोह गुणस्थान
१२ बारमूं क्षीणमोहनीय गुणस्थान
१३ तेरमूं संयोगी केवली गुणस्थान
१४ चौदमूं अयोगी केवली गुणस्थान

१२ बारमें बोलि पांच इन्द्रियां को तेवीस वि

श्रोतइन्द्री की तीन विषय
जीव शब्द १ अजीव शब्द २ मिश्र शब्द ३
चक्षु इन्द्री की पांच विषय

कालो १ पीलो २ नीलो ३ रातो ४ धोलो ५

घ्राणइन्द्री की दोय विषय

सुगन्ध १ दुर्गन्ध २

चक्षु इन्द्री की पांच विषय

खट्टो १ मीठो २ कडुवो ३ कसायलो ४ तीखो ५

स्पर्श इन्द्री की आठ विषय

हलको १ भारी २ खरदरो ३ सुहालो ४ लूखो ५

चिकनो ६ ठंडो ७ उन्हो ८ X

१३ तेरमें बोलै दश प्रकार की मिथ्यात्व

१ जीवनें अजीव सरदह ते मिथ्यात्व

२ अजीवनें जीव सरदह ते मिथ्यात्व

३ धर्मनें अधर्म सरदह ते मिथ्यात्व

४ अधर्मनें धर्म सरदह ते मिथ्यात्व

५ साधूनें असाधू सरदह ते मिथ्यात्व

६ असाधूनें साधू सरदह ते मिथ्यात्व

७ मार्गनें कुमार्ग सरदह ते मिथ्यात्व

८ कुमार्गनें मार्ग सरदह ते मिथ्यात्व

९ मोक्ष गयानें अमोक्ष गयो सरदह ते मिथ्यात्व

१० अमोक्ष गयानें मोक्ष गयो सरदह ते मिथ्यात्व

१४ चौदमें बोलै नव तत्व को जाणपणो तेंमा ११५

बोल की मन्यता होय .

चौदेजीवका

सूक्ष्म एकेन्द्रीका दोय भेद—

१ पहिलो अपर्याप्तो २ दूसरो पर्याप्तो

बादर एकेन्द्री का दोय भेद—

३ तीजो अपर्याप्तो ४ चौथो पर्याप्तो

बे इन्द्रीका दोय भेद—

५ पांचमूं अपर्याप्तो ६ छट्ठो पर्याप्तो

ते इन्द्रीका दोय भेद—

सातमूं अपर्याप्तो ८ आठमूं पर्याप्तो

चौ इन्द्रीका दोय भेद—

९ नवमूं अपर्याप्तो १० दशमूं पर्याप्तो

असन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेद—

११ इग्यारमूं अपर्याप्तो १२ बारमूं पर्याप्तो

सन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेद—

१३ तेरमूं अपर्याप्तो १४ पर्याप्तो

१४ चौदे अजीव का भेद—

धर्मास्ति कायका ३ भेद—

खंध, देश, प्रदेश

अधर्मास्ति कायका ३ भेद—

खंध, देश, प्रदेश

आकाशास्ति कायका ३ भेद—

खंध, देश, प्रदेश

कालको दशमूं भेद (ये दश भेद अरूपी छै)

पुद्गलास्ति कायका ४ च्यार भेद—

खंध, देश, प्रदेश, परमाणु

९ पुन्य नव प्रकारे—

अन्नपुन्ने १ पाणपुन्ने २ लेणपुन्ने ⊙ ३ सयण पुन्ने + ४ वत्थपुन्ने ५ मनपुन्ने ६ वचनपुन्ने ७ कायापुन्ने नमस्कारपुन्ने ९

१८ पाप अठारे प्रकार--

प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैसुन्य÷ १४ परपरिवाद १५ रतिअरति १६ मायामृषा १७ मिथ्यादर्शन शल्य १८

२० वीस आस्रवका—

मिथ्यात्व आस्रव १ अव्रत आस्रव २ प्रमाद आस्रव ३ कषाय आस्रव ४ जोग आस्रव ५ प्राणातिपात आस्रव ६ मृषावाद आस्रव ७

⊙ लेण=जगां जमीनादिक + सयण=खाट पाटलादिक

⊕ चाड़=रोलना ÷ पैसुन्य=चुगली

अदत्तादान आस्रव ८ मैथुन आस्रव ९ प
ग्रह आस्रव १० श्रोतइन्द्री मोकली मेले
आस्रव ११ चक्षु इन्द्री मोकली मेले
आस्रव १२ घ्राणइन्द्री मोकली मेले ते आ
१३ रसइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव
स्पर्शइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १५ म
वर्तावे ते आस्रव १६ वचनप्रवर्तावे ते आ
१७ कायाप्रवर्तावे ते आस्रव १८ भंडोप
णमेलतांअजयणाकरे* ते आस्रव १९
कुसाग्रमात्र सेवे ते आस्रव २०

२० बीस संवर का—

सम्यक ते संवर १ व्रत ते संवर २ अप्रम
संवर ३ अकषाय संवर ४ अजोग सं
प्राणातिपात न करे ते संवर ६ मृषावा
बोले ते संवर ७ चोरी न करे ते सं
मैथुन न सेवे ते संवर ८ परिग्रह न रा
संवर १० श्रुतइन्द्री वश करे ते संवर
चक्षुइन्द्री वशकरे ते संवर १२ घ्राणइन्द्री
करे ते संवर १३ रसइन्द्री वशकरे ते संवर

---

* अजयणा=यत्ना नहीं।

स्पर्शइन्द्री वशकरे ते संवर १५ मन वशकरे ते संवर १६ वचन वशकरे ते संवर १७ काया वशकरे ते संवर १८ भंडउवगरणनेयतां अजयणा न करे ते संवर १९ सुई कुसाग न सेवे ते संवर २०

१२ निर्जरा बारे प्रकारे

अनसन * १ ऊणोदरी + २ भिक्षाचरी ३ रसपरित्याग ४ कायाक्लेश ५ प्रतिसंलेषना ६ प्रायश्चित ७ विनय ८ वैयावच्च ९ सिज्झाय १० ध्यान ११ विउसग्ग ‡ १२

४ बंध च्यार प्रकारे—

प्रकृतिबंध १ स्थितिबंध २ अनुभागबंध ३ प्रदेशबंध ४

४ मोक्ष च्यार प्रकारे—

ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप ४

१५ पंदरमें बोले आत्मा आठ—

द्रव्य आत्मा १ कषाय आत्मा २ योग आत्मा ३ उपयोग आत्मा ४ ज्ञान आत्मा ५ दर्शन आत्मा ६ चारित्र आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८

---

* अनसन—उपवासादिक + ऊणोदरी—कमखाना

‡ विउसग्ग—निर्जरा के लिए कायोत्सर्ग

कायने पांच बोल थी बोलखीजे—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य, खेतथी लोक प्रमाणे, कालथी आदि अन्त रहित, भावथी रूपी, गुणथी गले मले, जीवास्तिकायनें पांच बोल करी बोल-खीजे—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य, खेतथी लोक प्रमाणे कालथी आदि अन्त रहित, भावथी अरूपी, गुणथी चैतन्य गुण।

२१ एकवीसमे बोले रासि २ होय—
जीवरासि १ अजीवरासि २

२२ बावीसमें बोले श्रावक का १२ बारे व्रत—
१ पहिला व्रत में श्रावक स्थावर जीव हणवा को प्रमाण करे और त्रस जीव हालतो चालतो हणवा का स उपयोग त्याग करे।
२ दूजा व्रत में मोटको झूठ बोलवा का स उपयोग त्याग करे।
३ तीजा व्रत में श्रावक राज दण्डे लोक भण्डे इसो मोटको चोरी करवा का त्याग करे।
४ चौथा व्रत में श्रावक मर्याद उपरान्त मैथुन सेवा का त्याग करे।
५ पांचमां व्रत में श्रावक मर्याद उपरान्त

• मन्दे मन्दे: घटे घटे: अथवा: जुदा एकत्र होय।

परिग्रह राखवा का त्याग करे ।

६ छट्ठा व्रत के विषे श्रावक दशों दिसि में मर्याद उपरान्त जावा का त्याग करे ।

७ सातवां व्रत के विषे श्रावक उपभोग परिभोग का बोल २६ छवीस के जिणारी मर्याद उपरांत त्याग करे तथा पंदरे कर्मा दान की मर्याद उपरान्त त्याग करे ।

८ आठमां व्रत के विषे श्रावक मर्याद उपरान्त अनर्थ दण्ड का त्याग करे ।

९ नवमां व्रत के विषे श्रावक सामायक की मर्याद करे ।

१० दशमां व्रत के विषे श्रावक देसावगासी संवर की मर्याद करे ।

११ इग्यारमूं व्रत श्रावक पोषह करे ।

१२ बारमूं व्रत श्रावक को शुद्ध साधू निर्ग्रन्थने निर्दोष आहार पाणी आदि चउदह प्रकार नों दान देवे ।

२३ तेईसमें बोले साधूजी का पंच महाव्रत—

१ पहिला महा व्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे जीव हिंसा करे नहीं करावे नहीं, करताने भलो जाणे नहीं, मनसे वचनसे कायासे ।

२ दूसरा महा व्रत में साधूजी सर्वथा प्रकार झूंठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलतां प्रते भलो जाणे नहीं, मनसे वचनसे कायासे।

३ तीजा महाव्रत मे साधूजी सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करतां प्रते भलो जाणे नहीं मनसे वचनसे कायासे।

४ चोथा महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नहीं, सेवावे नहीं, सेवतां प्रते भलो जाणे नहीं, मनसे वचनसे कायासे।

५ पांचमां महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं, रखावे नहीं, राखतां प्रते भलो जाणे नहीं, मनसे वचनसे कायासे।

३ चौबीसमें बोले भांगा ४९ गुणचाम— करण ३ जोग ३ तीन से हुवे।
करण ३ का नाम—करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं, जोग ३ का नाम—मनसा वायसा कायसा।

आंक ११ का भांगा ९—

एक करण एक जोग से कहणा, करूं नहीं, मनसा, १ करूं नहीं वायसा, २ करूं नहीं कायसा ३ कराऊं नहीं मनसा, ४ कराऊं नहीं वायसा, ५

राऊं नहीं कायसा, ६ अनुमोदूं नहीं मनसा, ७ मोदूं नहीं वायसा, ८ अनुमोदूं नहीं कायसा ९

क १२ वारमां का भाग ९—

एक करण दोय जोगसें, करूं नहीं मनसा वायसा, १ करूं नहीं मनसा कायसा, २ करूं नहीं वायसा कायसा, ३ कराऊं नहीं मनसा वायसा, ४ कराऊं नहीं मनसा कायसा, ५ कराऊं नहीं वायसा कायसा, ६ अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा, ७ अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, ८ अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा ९

आंक १३ का भांगा ३ तीन—

एक करण तीन जोगसें, करूं नहीं मनसा वायसा कायसा, १ कराऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, २ अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा ३

आंक २१ का भांगा ९—

दोय करण एक जोगसें, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा, १ करूं नहीं कराऊं नहीं वायसा २ करूं नहीं कराऊं नहीं कायसा ३ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, ४ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा, ५ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा, ६ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं

मनसा, ७ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा ८ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ६ ।

आंक २२ बावीस का भांगा ९ नव—

दोय करण दोय जोगसें, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वायसा, १ करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा कायसा २ करूं नहीं कराऊं नहीं वायसा कायसा, ३ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा, ४ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, ५ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा, ६ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा, ७ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, ८ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा ९ ।

आंक २३ तेवीसका भांगा ३ तीन—

दोय करण तीन जोगसें, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, १ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा २ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा ३ ।

आंक ३१ का भांगा ३ तीन—

तीन करण एक जोगसें, करूं नहीं कराऊं

करो कि जो किसी भी जीवको न मारे, झूठ न बोले, चोरी न करे, स्त्री से विषय भोग न करे, और एक कौड़ी मात्र भी परिग्रह न रखे ऐसे साधू ही दुखों से छुड़ा कर कल्याण का रस्ता बताने में समर्थ हैं, बाकी सब ढोंग है, जहां पर कनक और कामिनी विराजमान हैं वहां कुछ नहीं, हे मित्र! मत भरमो।

३ जो आदमी तमामखोरी में और इन्द्रियों की विषय में डूबे रहते हैं उनके पाससे इतनी बातें चली जाती है, दौलत, इज्जत, जोर, रङ्ग, रूप धर्म, पुन्य, जप, तप; सिवाय इनके अनेक नुकसान हैं इसलिए विषय भोग में लिप्त रहना दुर्गति गामियों का काम है।

४ क्रोध सरिखा जहर नहीं १ मान सरिखा वैर नहीं २ माया सरिखा भय नहीं ३ लोभ सरिखा दुःख नहीं ४ दया सरिखा अमृत नहीं ५ सांच सरिखा शरण नहीं ६ सन्तोष सरिखा सुख नहीं ७ धर्म सरिखा मित्र नहीं ८ औरत सरावे वो जती ८ साधू वतावे वो सती।

५ पाच टाले सो पण्डित १ दया करे सो दाने- श्वरी २ कुसंगत छोड़े सो चतुर ३ धर्म करे

सो ज्ञानी ४ थिर चित्त रक्खे सो ध्यानी ५ इन्द्रियां दमें सो शूरा ६ पर उपकार करे सो पूरा ७ गुणवन्तों का गुण गावे सो गुणवान ८ निर्धन से नेहकरे सो पुन्यवान ६

॥ इति ॥

॥ अथ पानाकी चरचा ॥

१ जीव रूपीकि अरूपी; अरूपी; किणन्याय; कालो पीलो नीलो रातो धोलो ए पांच वर्ण नहीं पावे इण न्याय ।

२ अजीव रूपीकि अरूपी; रूपी अरूपी दोनूं हीं, किणन्याय धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय काल ये च्यारू तो अरूपी और पुद्गलास्तिकाय रूपी ।

३ पुन्य रूपीकि अरूपी, रूपी, ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल, पुद्गल ते रूपी ही छै ।

४ पाप रूपीकि अरूपी; रूपी, ते किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल, पुद्गल ते

५ आस्रव रूपी कि अरूपी, अरूपी ते, किणन्याय आस्रव जीवका परिणाम छै, परिणाम ते जीव छै, जीव ते अरूपी छै, पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय।

६ संवर रूपी कि अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण पावे नहीं।

७ निर्जरा रूपीकि अरूपी अरूपी छै, ते, किणन्याय निर्जरा जीवका परिणाम छै पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय।

८ बंध रूपी कि अरूपी, रूपी किणन्याय बंध ते शुभ अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै।

९ मोक्षरूपी कि अरूपी, अरूपी छै, ते किण न्याय समस्त कर्म से मूकावे ते मोक्ष अरूपी ते जीव-सिद्ध थया ते मां पांच वर्ण पावे नहीं इणन्याय।

॥ लड़ी दूजी सावद्य निरवद्य की ॥

१ जीव सावद्य कि निरवद्य, दोनूं ही छै, ते किण-न्याय चोखा परिणामां निरवद्य, खोटा परिणामा सावद्य छै।

२ अजीव सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं अजीव छै।

३ पुन्य सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं अजीव छै।

४ पाप सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आस्रव सावद्य कि निरवद्य, दोनूं ही छै किणन्याय मिथ्यात्व आस्रव, अव्रत आस्रव, प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ये च्यार तो एकान्त सावद्य छै, शुभ जोगां से निर्जरा होय जिण आसरी निरवद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै।

६ संवर सावद्य कि निरवद्य; निरवद्य छै, ते किण-न्याय कर्म रोकवारा परिणाम निरवद्य छै।

७ निरजरा सावद्य कि निरवद्य; निरवद्य छै ते किण-न्याय कर्म तोड़वारा परिणाम निरवद्य छै।

८ बन्ध सावद्य कि निरवद्य; दोनूं नहीं ते किणन्याय अजीव छै इणन्याय।

९ मोक्ष सावद्य कि निरवद्य, निरवद्य छै, सकल कर्म मूकाय सिद्ध भगवन्त थया ते निरवद्य छै।

॥ छड़ी तीजी आज्ञा मांहि बाहरकी ॥

१ जीव आज्ञा मांहि कि बाहिर; दोनूं छै ते किण न्याय, जीवका चोखा परिणाम आज्ञा मांहि छै खोटा परिणाम आज्ञा बाहिर।

२ अजीव आज्ञा मांहि कि बाहिर, दोनूं नहीं, अजीव छै।

३ पुन्य आज्ञा मांहि कि बाहिर, दोनूं नहीं, अजीव छै इणन्याय।

४ पाप आज्ञा मांहि बारे दोनूं नहीं, अजीव छै।

५ आस्रव आज्ञा मांहि कि बारे; दोनूं मांहि छै, ते किणन्याय, आस्रव नां पांच भेद छै तिण में मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद कषाय ए च्यार तो आज्ञा बाहिर छै, अने जोग नां दोय भेद शुभ जोग तो आज्ञा मांहि छै, अशुभ जोग आज्ञा बाहिर छै।

६ संवर आज्ञा मांहिकि बाहिर, आज्ञा मांहि छै ते किण न्याय कर्म रोकवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै।

७ निर्जरा आज्ञा मांहिकि बाहिर; आज्ञा मांहि छै; ते किणन्याय कर्म तोड़वारा परिणाम आज्ञा मांहि छै।

८ बंध आज्ञा मांहिकि बाहिर; दोनूं नहीं, ते किण-न्याय, आज्ञा मांहि बाहिर तो जीव हुवे ए बंध तो अजीव छै इणन्याय।

९ मोक्ष आज्ञा मांहि कि बाहिर; आज्ञा मांहि छै ते

किणन्याय, कर्म मूंकाय सिद्ध थया ते आज्ञा में छै।

॥ लड़ी चौथी जीव अजीव की ॥

१ जीव ते जीव छै कि अजीव: जीव, ते किणन्याय सदाकाल जीव को जीव रहसी अजीव कदे हुवे नहीं।

२ अजीव ते जीव छै कि अजीव छै; अजीव छै, अजीव को जीव किण ही काल में हुवे नहीं।

३ पुन्य जीव छै कि अजीव छै, अजीव छै, ते किण-न्याय शुभ कर्म पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छै।

४ पाप जीव छै कि अजीव छै; अजीव छै, किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै।

५ आस्रव जीव छै कि अजीव छै: जीव छै ते किण-न्याय शुभ अशुभ कर्म ग्रहे ते आस्रव छै कर्म ग्रहे ते जीव ही छै।

६ संवर जीवकि अजीव: जीव छै, ते किणन्याय कर्म रोके ते जीव ही छै।

७ निरजरा जीव कि अजीव: जीव छै, किणन्याय कर्म तोड़े ते जीव छै।

८ बंध जीव कि अजीव छे; अजीव छे, ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म को बंध अजीव छे।

९ मोक्ष जीव कि अजीव, जीव छे, किणन्याय स कर्म मूकावे ते मोक्ष जीव छे।

॥ लड़ी पांचमी जीव चोर कि साहूकार ॥

१ जीव चोरकि साहूकार; दोनूं छे किणन्याय चोखा परिणामां साहूकार छे मांठा परिणामां चोर छे।

२ अजीव चोर कि साहूकार; दोनूं नहीं, किणन्याय चोर साहूकार तो जीव हुवे थे अजीव छे।

३ पुन्य चोरकि साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छे।

४ पाप चोरकि साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छे।

५ आस्रव चोर कि साहूकार, दोनूं छे किणन्याय च्यार आस्रव तो चोर छे, अने अशुभ जोग पण चोर छे, शुभ जोग साहूकार छे।

६ संवर चोर कि साहूकार; साहूकार छे, किणन्याय, कर्म रोकवारा परिणाम साहूकार छे।

७ निर्जरा चोर कि साहूकार; साहूकार छे, किणन्याय कर्म तोड़वारा परिणाम साहूकार छे।

८ बंध चोर कि साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छे।

७ निरजरा छांडवा जोगके आदरवा जोग, आदरवा जोग छे, किणन्याय देसथी कर्म तोड़े देशथी जीव उज्वल थाय ते निरजरा छे ते आदरवा जोग छे।

८ बंध छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छे ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म नों बंध छांडवा जोग ही छे।

९ मोक्ष छांडवा जोग के आदरवा जोग, आदरवा जोग छे, ते किणन्याय सकल कर्म खपावे, जीव निरमल थाय, सिद्ध हुवे, इणन्याय आदरवा जोग छे।

॥ षटद्रव्यपे लड़ी आतमी रूपी अरूपी की ॥

१ धर्मास्तिकाय रूपी के अरूपी अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

२ अधर्मास्तिकाय रूपी के अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

३ आकाशास्तिकाय रूपी के अरूपी, अरूपी, किणन्याय, पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

४ काल रूपी के अरूपी, अरूपी किणन्याय, पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

५ पुद्गल रूपी कि अरूपी; रूपी, किणन्याय, पांच वर्ण पावे इणन्याय ।

६ जीव रूपी कि अरूपी; अरूपी किणन्याय, पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय ।

॥ छव द्रव्य पर लड़ी आठमी सावद्य निर्वद्यकी ॥

१ धर्मास्ति काय सावद्य कि निर्वद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै ।

२ अधर्मास्ति काय सावद्य कि निर्वद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै ।

३ आकाशास्ति काय सावद्य कि निर्वद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै ।

४ काल सावद्य कि निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै ।

५ पुद्गलास्तिकाय सावद्य कि निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै ।

६ जीवास्तिकाय सावद्य कि निर्वद्य दोनूं छै, खोटा परिणाम सावद्य छै, चोखा परिणाम निर्वद्य छै ।

॥ छव द्रव्य पर लड़ी ६ नवमी ॥

१ धर्मास्तिकाय आज्ञा मांहि कि बाहर; दोनूं नहीं, ते किण न्याय, आज्ञा मांहि बाहर तो जीव छै अने ए अजीव छै ।

२ अधर्मास्तिकाय आत्मा मांहिके बाहर, दोनूं नां किण न्याय, अजीव छै।

३ आकाशास्ति काय आत्मा मांहि कै बाहर, दो नहीं, किणन्याय, अजीव छै।

४ काल आत्मा मांहि कै बाहर, दोनूं नहीं, कि न्याय अजीव छै।

५ पुद्गल आत्मा मांहि कै बाहर, दोनूं नहीं, कि न्याय, अजीव छै।

६ जीव आत्मा मांहि कै बाहिर, दोनूं छैं, जिणन्य निर्वेदा करणी आत्मा मांहि छै मावद्य आ आत्मा बाहर छै इणन्याय।

॥ लड़ी १० दसमी ॥

१ धर्मास्ति काय चोर कि माहूकार, दोनूं, नां किणन्याय, चोर माहूकार तो जीव छै, ए धर्मा काय अजीव छै, इणन्याय।

२ अधर्मास्ति काय चोर कि माहूकार; दोनूं नां अजीव छै।

३ आकाशास्ति काय चोर कि माहूकार; दोनूं नां अजीव छै।

४ काल चोर कि माहूकार; दोनूं नहीं, अजीव छै

५ पुद्गल चोर कि साहूकार; दोनूं नहीं. अजीव छै।

६ जीव चोर कि साहूकार; दोनूं छै, किणन्याय मांठा परिणाम आंसरी चोर छै, चोखा परिणामां आंसरी साहूकार।

॥ छव द्रव्य पर लड़ी इग्यारमी जीव अजीव की ॥

१ धर्मास्ति काय जीव कि अजीव; अजीव छै।

२ अधर्मास्ति काय जीव कि अजीव; अजीव छै।

३ आकाशास्ति काय जीवके अजीव; अजीव छै।

४ काल जीव कि अजीव; अजीव छै।

५ पुद्गलास्ति काय जीवकि अजीव; अजीव छै।

६ जीवास्ति काय जीव कि अजीव; जीव छै।

॥ छव द्रव्य पर लड़ी बारमी एक अनेक की ॥

१ धर्मास्तिकाय एक छै कि अनेक छै; एक छै, किण-न्याय, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छै।

२ अधर्मास्ति काय एक छै कि अनेक छै; एक छै. द्रव्यथकी एक ही द्रव्य छै।

३ आकाशास्ति काय एक कि अनेक; एक छै, लोक अलोक प्रमाणे एक ही द्रव्य छै।

४ काल एक छै के अनेक छै; अनेक छै, द्रव्यथ
अनन्ता द्रव्य छै इणन्याय ।

५ पुद्गल एक छै के अनेक छै, अनेक छै, द्रव्यथ
अनन्ता द्रव्य छै इणन्याय ।

६ जीव एक छै के अनेक छै, अनेक छै, अनन्ता
इणन्याय ।

॥ लड़ी १३ तेरमी ॥

॥ छव में नव मे की चरचा ।

१ कर्मां को कर्त्ता छव पदारथ में कोण ? नव त
में कोण ? उत्तर—छवमे जीव, नवमें बी
आसव ।

२ कर्मां को उपार्जिता छवमें कोण ? नव में कोण
उत्तर—छवमें जीव, नवमें जीव, आसव ।

३ कर्मां को लगावता छवमें कोण ? नवमें कोण
उ०—छवमें जीव, नवमें जीव, आसव ।

४ कर्मां को रोकता छवमें कोण ? नवमें कोण
उ०—छवमें जीव, नवमें जीव, संवर ।

५ कर्मां को तोड़ता छवमें कोण ? नवमें कोण
उ०—छवमें जीव, नवमें जीव, निर्जरा ।

६ कर्मां को बांधता छवमें कोण ? नवमें कोण
छव में जीव, नवमें जीव, आसव ।

७ कर्मों को सूक्षमता छवनें कोण ? नवनें कोण ? छवमें जीव, नवनें जीव, मोक्ष ।

॥ लड़ी १४ चौदमी ॥

१ अठारे पाप सेवे ते छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव आस्रव ।

२ अठारे पाप सेवाका त्याग करे ते छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव, निर्जरा । अने त्याग छवमें जीव, नवमें जीव संवर ।

३ सामायक छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव, संवर ।

४ व्रत छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नव में जीव संवर ।

५ अव्रत छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव आस्रव ।

६ अठारे पाप को वेहरमण छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव संवर ।

७ पञ्च महाव्रत छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव संवर ।

८ पांच चारित्र छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव, संवर ।

९ पांच सुमति छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव, निर्जरा।

१० तीन गुप्ती छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव, संवर।

११ बारे व्रत छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव, संवर।

१२ धर्म छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव नव में जीव, संवर, निर्जरा।

१३ अधर्म छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव।

१४ दया छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव, संवर, निर्जरा।

१५ हिन्सा छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव।

॥ लड़ी १५ पंद्रमी ॥

१ जीव छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा मोक्ष।

२ अजीव छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पांच, नवमें अजीव, पुन्य, पाप, बंध।

३ पुन्य छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, बंध।

४ पाप छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पाप, बंध ।

५ आस्रव छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव ।

६ संवर छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव, संवर ।

७ निर्जरा छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव, निर्जरा ।

८ बंध छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

६ मोक्ष छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव, मोक्ष ।

॥ लड़ी १६ सोलहमी ॥

१ धर्मास्ति छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें धर्मास्ति, नवमें अजीव ।

२ अधर्मास्ति छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें अधर्मास्ति, नवमें अजीव ।

३ आकाशास्ति छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें आकाशास्ति, नवमें अजीव ।

४ काल छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें काल, नवमें अजीव ।

५ पुद्गल छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें ... नवमें अजीव, पुन्य, पाप, बंध।

६ जीव छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव संवर, निर्जरा मोक्ष।

॥ लड़ी १७ सतरमी ॥

१ लेखण (कलम) पूठी, कागद को पानों, लकड़ी की पाटी; छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें अजीव।

२ पातो, रजोहरण, चादर चोलपट्टो आदि भंड उपगरण, छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें अजीव।

३ धानको दाणो, छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव।

४ रूंख (वृक्ष) छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव नवमें जीव।

५ तावड़ो छायां छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें अजीव।

६ दिन रात छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें काल, नवमें अजीव।

७ सीमिद्ध भगवान छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव मोक्ष।

॥ लड़ी १८ अठारमी ॥

१ पुन्य धर्म एकके दोय ? दोय, किणन्याय, पुन्य तो अजीव छे, धर्म जीव छे।

२ पुन्य और धर्मास्ति एक के दोय ? दोय, किण-न्याय, पुन्य तो रूपी छे धर्मास्ति अरूपी छे।

३ धर्म और धर्मास्ति एक के दोय ? दोय, किण-न्याय, धर्म तो जीव छे, धर्मास्ति अजीव छे।

४ अधर्म और अधर्मास्ति एक के दोय ? दोय, किणन्याय, अधर्म तो जीव छे, अधर्मास्ति अजीव छे।

५ पुन्य अनें पुन्यवान एक के दोय ? दोय, किण-न्याय, पुन्य तो अजीव छे, पुन्यवान जीव छे।

६ पाप अने पापी एकके दोय ? दोय, किणन्याय, पाप तो अजीव छे, पापी जीव छे।

७ कर्म अनें कर्मां को करता एकके दोय ? दोय, किणन्याय, कर्म तो अजीव छे; कर्मांरो करता जीव छे।

॥ लड़ी १९ उन्नीसमी ॥

१ कर्म जीव के अजीव ? अजीव।

२ कर्म रूपीके अरूपी ? रूपी छे।

३ कर्म सावद्य कि निरवद्य; दोनूं नहीं पर्यो[illegible]
४ कर्म चोर कि साहुकार; दोनूं नहीं पर्यो[illegible]
५ कर्म आज्ञा मांहि कि बाहर; दोनूं नहीं? [illegible]
६ कर्म छांडवा जोग कि आदरवा जोग, [illegible]
जोग है।
७ आठ कर्मां में पुन्य कितना पाप [illegible]
ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, [illegible]
ए च्यार कर्म तो एकान्त पाप है, वेदनी, [illegible]
गोत्र, आयु ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूं [illegible]

॥ लड़ी २० वीसमी ॥

१ धर्म जीव कि अजीव ? जीव है।
२ धर्म सावद्य कि निरवद्य ? निरवद्य है।
३ धर्म आज्ञा मांहि कि बाहर ? श्री वीतराग [illegible]
आज्ञा मांहि है।
४ धर्म चोर कि साहुकार ? साहुकार है।
५ धर्म रूपी कि अरूपी ? अरूपी है।
६ धर्म छांडवा जोग कि आदरवा जोग ? [illegible]
जोग है।
७ धर्म पुन्य कि पाप ? दोनूं नहीं. [illegible]
धर्म तो जीव है, पुन्य पाप अजीव है।

॥ लड़ी २१ इक्कीसमी ॥

१ अधर्म जीव कि अजीव ? जीव है ।

२ अधर्म सावद्य कि निरवद्य ? सावद्य है ।

३ अधर्म चोर कि साहूकार ? चोर है ।

४ अधर्म आज्ञा मांहि कि बाहर; बाहर है ।

५ अधर्म रूपी कि अरूपी ? रूपी है ।

६ अधर्म छांडवा जोग कि आदरवा जोग ? छांडवा जोग है ।

॥ लड़ी २२ बाईसमी ॥

१ सामायक जीव कि अजीव ? जीव है ।

२ सामायक सावद्य कि निरवद्य ? निरवद्य है ।

३ सामायक चोर कि साहूकार ? साहूकार है ।

४ सामायक आज्ञा मांहि कि बाहर ? आज्ञा मांहि है ।

५ सामायक रूपी कि अरूपी ? अरूपी है ।

६ सामायक छांडवा जोग कि आदरवा जोग ? आदरवा जोग है ।

७ सामायक पुन्यकि पाप ? दोनूं नहीं, क्रियन्याव पुन्य पाप अजीव है, सामायक जीव है ।

॥ लड़ी २३ तेबीसमी ॥

१ सावद्य जीव कि अजीव ? जीव है ।

२ सावद्य सावद्य छै कि निरवद्य ? सावद्य छै।
३ सावद्य आज्ञा मांहि कि बाहर ? बाहर छै।
४ सावद्य चोर कि साहूकार ? चोर छै।
५ सावद्य रूपी कि अरूपी ? अरूपी छै।
६ सावद्य छांडवा जोग कि आदरवा जोग ? छांड
जोग छै।
७ सावद्य पुन्य, कि पाप ? दोनूं नहीं; पुन्य पाप
अजीव छै, सावद्य जीव छै।

॥ लड़ी २४ चोवीसमी ॥

१ निरवद्य जीव कि अजीव ? जीव छै।
२ निरवद्य सावद्य कि निरवद्य ? निरवद्य छै।
३ निरवद्य चोर कि साहूकार ? साहूकार छै।
४ निरवद्य आज्ञा मांहि कि बाहर ? मांहि छै।
५ निरवद्य रूपी कि अरूपी ? अरूपी।
६ निरवद्य छांडवा जोग कि आदरवा जोग ? आ
रवा जोग छै।
७ निरवद्य धर्म कि अधर्म ? धर्म छै।
८ निरवद्य पुन्य कि पाप ? पुन्य पाप दोनूं न
किणन्याय ? पुन्य पाप तो अजीव छै, निर
जीव छै।

॥ लड़ी २५ पचीसमी ॥

१ नव पदार्थ में जीव कितना पदार्थ ? अने अजीव कितना पदार्थ ? जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष, ये पांच तो जीव छै; अने अजीव, पुन्य, पाप, बंध, ये च्यार पदार्थ अजीव छै।

२ नव पदार्थ में सावद्य कितना निरवद्य कितना ? जीव अने आस्रव ये दोय तो सावद्य निरवद्य दोनूं छै, अजीव, पुन्य, पाप, बंध, ये सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं। संवर, निर्जरा, मोक्ष, ये तीन पदार्थ निरवद्य छै।

३ नव पदार्थ में आज्ञा मांहि कितनां आज्ञा बाहर कितना ? जीव, आस्रव, ये दोय तो आज्ञा मांहि पण छै, अने आज्ञा बाहर पण छै। अजीव, पुन्य, पाप, बंध, ये च्यार आज्ञा मांहि बाहर दोनूं ही नहीं। संवर, निर्जरा, मोक्ष, ये आज्ञा मांहि छै।

४ नव पदार्थ में चोर कितना साहूकार कितना ? जीव, आस्रव, तो चोर साहूकार दोनूं ही छै। अजीव, पुन्य, पाप, बंध ये चोर साहूकार दोनूं

॥ लड़ी २१ मत्ताईसमी ॥

१ पुन्य धर्मकि अधर्म ? दोनूं नहीं, किणन्याय धर्म अधर्म जीव छै, पुन्य अजीव छै।

२ पाप धर्म कि अधर्म ? दोनूं नहीं, किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव छै पाप अजीव छै।

३ बंध धर्मकि अधर्म ? दोनूं नहीं, किणन्या धर्म अधर्म तो जीव छै बंध अजीव छै।

४ कर्म अने धर्म एक कि होय ? होय छै, किणन्य कर्म तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

५ पाप अने धर्म एक कि होय ? होय छै, किणन्याय! पाप तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

६ अधर्म अनें अधर्मास्ति एक कि होय ? होय किणन्याय ? अधर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै।

७ धर्म अने धर्मास्ति एक कि होय ? होय, किण न्याय ? धर्म तो जीव, छै, धर्मास्ति अजी छै।

८ धर्म अनें अधर्मास्ति एक कि होय ? होय, कि अन्याय ? धर्म तो जीव; अधर्मास्ति अजीव छै

९ अधर्म अनें धर्मास्ति एक कि होय ? हो

११ गुणस्थान किसो पावे—व्यवहारथी पांचमूं, साधू नें पूछे तो छट्टो।

१२ विषय कितनां पावे २३—तेवीस।

१३ मिथ्यात्वनां दस बोल पावे के नहीं, व्यवहारथी नहीं पावे।

१४ जीवका चौदा भेदामें से किसो भेद पावे, १ एक चोदमूं पर्याप्तो सन्नी पञ्चेन्द्री को पावे.।

१५ आतमां कितनी पावे श्रावकमें तो ७सात पावे, अनें साधू में आठ पावे।

१६ दण्डक किसोपावे—एक इकवीसमु।

१७ लेस्या कितनी पावे—६ छव।

१८ दृष्टी कितनी पावे—व्यवहारथी ऐक, सम्यक् दृष्टी पावे।

१९ ध्यान कितना पावे—३ तीन, सुक्ल ध्यान टालके।

२० छवद्रव्यमें किसा द्रव्य पावे १—ऐक जीव द्रव्य।

२१ रासि किसी पावे—एक जीव रासि।

२२ श्रावक का बारा व्रत श्रावक नें पावे।

२३ साधू का पञ्च महा व्रत पावे के नहीं—साधू में पावें श्रावक नें पावे नहीं।

प्रश्नोत्तर।

१ थारी गति कांई—मनुष्य गति।

२ थारी जाति कांई—पंचिन्द्री।

३ थारी काय कांई—त्रस काय।

४ इन्द्रीयां कितनीपावे—५ पांच

५ पर्याय कितनापावै—छव

६ प्राण कितना पावे—१० दस पावे।

७ शरीर कितना पावे—३तीन—औदारिक, स, कार्मण।

८ जोग कितना पावै—९नव पावै च्यार मन च्यार वचनका, एक काया की,

९ तूमें उपयोग कितना पावे ४ च्यार पावै ज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ चक्षु दर्शन ३ दर्शन ४

१० थारै कर्म कितना ८ आठ।

२४ पांच चारित्र श्रावक में पावै के नहीं; नहीं पावै, एक देस चरित्र पावै ।

१ एकेन्द्री की गति कांई—तिर्यंचगति ।

२ एकेन्द्री की जाति कांई—एकेन्द्री ।

३ एकेन्द्री में काया किसी पावै ५—पांच थावर की ।

४ एकेन्द्री में इन्द्रीयां कितनी पावै—एक स्पर्श इन्द्री ।

५ एकेन्द्री में पर्याय कितनी पावै—४ च्यार मन भाषा ए दोय टली ।

६ एकेन्द्री में प्राण कितना पावै ४—च्यार पावै स्पर्श इन्द्रीय बलप्राण १ कायबलप्राण २ स्वासोस्वासबलप्राण ३ आउषोबलप्राण ४

७ सुरड माटी मुलतानी पत्थर सोना चांदी रत्नादिक पृथ्वीकाय का प्रश्नोत्तर ।

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	पृथ्वीकाय
इन्द्रियां कितनी पावै	एक स्पर्श इन्द्री

जाति कांई	एकेन्द्री
काय कांई	वायुकाय
इन्द्रियाँ कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार उपर प्रमाणे
प्राण कितना	४ च्यार उपर प्रमाणे

११ वृक्ष, लता, पान, फूल, फल, लीलण, फूलण आदि वनस्पतिकायनां प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय कांई	वनस्पतिकाय
इन्द्रियाँ कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितना	च्यार उपर प्रमाणे
प्राण कितना	च्यार उपर प्रमाणे

१२ लट गिंडोला आदि बेन्द्रीका प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	बेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियाँ कितनी	२ दोय, स्पर्श, रस, इन्द्री
पर्याय कितनी	५ पांच मन पर्याय टली
प्राण कितना	६ छय, रस इन्द्री बल प्राण १
	स्पर्श इन्द्री बल प्राण २
	काय बल प्राण ३

१५ पंचेन्द्रीका

प्रश्न	उत्तर
गति कितनी पावे	४ च्यारूँ हीं पाय
जाति कांई	पञ्चेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियाँ कितनी	पाचोंहीं
पर्याय कितनो	६ छयों ही पावे सन्नीमें, और असन्नीमें ५ पांच, मन टल्यो,
प्राण कितना पावे	सन्नी में तो १० दसुं ही पावे, असन्नी में ६ पावे मन टल्यो

१६ नारकी की पृछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	नरक गति
जाति कांई	पञ्चेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियाँ कितनी	५ पाचोंही
पर्याय कितनी	६ छः
प्राण कितना	१० दसोंही

१७ देवता की पृछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	देव गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रसकाय

४ एकेन्द्री सन्नी के असन्नी—असन्नी, जिक॰ मन नहीं

५ एकेन्द्री सुक्ष्म के बादर—दोनूं हीं छे जिक॰ एकेन्द्री दोय प्रकार कीं छे, दीखे ते बादर छे, नहीं दीखे ते सुक्ष्म छे

६ एकेन्द्री त्रस के स्थावर—स्थावर छे, हाले चाले नहीं

७ एकेन्द्री में इन्द्रीयां कितनी—एक स्पर्श इन्द्री (शरीर)

८ पृथ्वीकाय अपकाय तेउका वायुकाय वनस्पतिकाय

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छे मन नहीं
सुक्ष्म के बादर	दोनू ही प्रकार की छे
त्रसके स्थावर	स्थावर छे

९ बेन्द्री तेन्द्री चौ इन्द्रीकी पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्न के असन्नी	असन्नी छे मन नहीं
सुक्ष्म के बादर	बादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

५ मनुष्यमें वेद कितना पावे—असन्नी मनुष्य चौदे थानक में उपजे जिणां में तो वेद एक नपुंसक ही पावे है, सन्नी मनुष्य गर्भमें उपजे जिणांमें वेद तीनोंही पावे है

६ नारकी में वेद कितना पावे-एक नपुंसक वेद ही पावे है।

७ जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर यां पांच प्रकार का तिर्यंचा में वेद कितनां पावे—इनो-कैन उपजे ते असन्नी है जिणांमें तो वेद नपुं-सकही पावेहै, अनें गर्भमें उपजे ते सन्नीहै जिणां में वेद तीनोंही पावेहै।

८ देवतामें वेद कितना पावे—ऊपर भवनपती, वाणव्यन्तर, जोतिषी, पहिला दूजा देव लोक तांई तो वेद दोय स्त्री १ पुरुष २ पावेहै, और तीजा देवलोक में सर्वार्थ सिद्ध तांई वेद एक पुरुषही है।

९ चौबीस दण्डक का जीवां के कर्म कितना—तेवीस दण्डकका जीवांके तो कर्म आठही पावे है, एक मनुष्य में सात आठ तथा च्यार पावे है।

१४ देवता की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सुक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१५ गाय भैंस हाथी घोड़ा बलद पक्षी आदि का जानवर की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनू ही प्रकार का छै छमो छंमके मन नहीं, गर्भज के मन छै
सुक्ष्म के बादर	बादरछै, नेत्रमे देखवा में आवै छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै हाले चाले छै

१ एकेन्द्री मे वेद कितना पावै—ऐक नपुंसक वेद पावैं

२ पृथ्वी पाणी वनस्पति अग्नी वायरो यां पांचां मेंद कितना पावे—१ ऐक नपुंसकही छै

३ बेन्द्री तेन्द्री चौइन्द्री में वेद कितना पावे—ऐक नपुंसक वेदही पावे छै

४ पंचेन्द्रीमें वेद कितना पावै—सन्नी में तो तीनों ही वेद पावे छै, असन्नीमें ऐक नपुंसक वेद ही छै

५ मनुष्यमें वेद कितना पावै—असन्नी मनुष्य चौदे थानक में उपजै जिणां में तो वेद ऐक नपुंसक ही पावै छै, सन्नी मनुष्य गर्भमें उपजै जिणांमें वेद तीनोंही पावै छै

६ नारकी में वेद कितना पावै-ऐक नपुंसक वेद ही पावै छै।

७ जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर यां पांच प्रकार का तिर्यंचा में वेद कितनां पावै—समो-र्छम उपजै ते असन्नी छै जिणांमें तो वेद नपुं-सकही पावैछै, अनें गर्भमें उपजै ते सन्नीछै जिणां में वेद तीनोंही पावैछै।

८ देवतामें वेद कितना पावै—उत्तर भवनपती, वाणव्यन्तर, जोतिषी, पहिला दुजा देव लोक तांई तो वेद दोय स्त्री १ पुरुष २ पावैछै, और तीजा देवलोक सें स्वार्थ सिद्ध, तांई वेद ऐक पुरुषही छै।

९ चौवीस दण्डक का जीवां के कर्म कितना—उगणीस दण्डकका जीवांमें तो कर्म आठही पावै छै, अनै मनुष्य में सात आठ तथा च्यार पावै छै।

१ धर्म व्रत में कि अव्रत में—व्रत में।

२ धर्म आज्ञा मांहि कि बाहर—श्रीवीतरागकी आज्ञा मांहि छै।

३ धर्म हिन्सा में कि दया में—दयामें।

४ धर्म मोल मिले कि नहीं मिले—नहीं धर्म तो अमूल्य छै।

५ देव मोल मिले कि नहीं मिले—नहीं मिले अमूल्य छै।

६ गुरु मोललियां मिले कि नहीं मिले—नहीं मिले, अमुल्य छै।

७ साधूजी तपस्या करे ते व्रत में कि अव्रत में—व्रत पुष्टको कारण छै। अधिक निर्जरा धर्म छै।

८ साधु जो पारणो करे ते व्रत में कि अव्रत में—अव्रतमें नहीं, किणन्याय? साधू कै कोई प्रकार अव्रतरही नहीं सब सावद्य जोगका त्याग छै। तिणसूं निरजरायाय छै तथा व्रत पुष्टको कारण छै

९ श्रावक उपवास आदि तपकरे ते व्रत में कि अव्रत में—व्रत में।

१० श्रावक पारणूं करे ते व्रत में कि अव्रत में—अव्रत में किणन्याय? श्रावक को खाणों पीणों

पहरणों ए सर्व अव्रत में छै श्रीउववाई तथा सुयगडांग सूत्र में विसतारकरलिख्या छै।

११ साधुजी नें सूजतो निर्दोष आहार पाणी दियां कांई होवे. व्रतमें की अव्रत में—असुभ कर्म खयथाय तथा पुन्य वंधे छै, १२ मूं व्रतछै

१२ साधुजीनें असूजतो दोष सहित आहार पाणी दियां कांई होवै तथा व्रत में कि अव्रत में— श्रीभगवती सूत्र में कह्यो छै, तथा श्री ठाणांग सूत्र कि तीजे ठाणें में कह्यो छै अलप आयुबंधे अकल्याणकारी कर्म बंधे तथा असूजतो देणोतें व्रत में नहीं। पाप कर्म वंधे छै

१३ अरिहंत देव देवता कि मनुष्य—मनुष्य है।

१४ साधु देवता कि मनुष्य—मनुष्य है।

१५ देवता साधुनें वंदा करै कि नहीं करै—करै साधु तो सबका पूजनीक है।

१६ साधु देवता को वंदा करैकिनहींकरै—नहीं करै।

१७ सिद्ध भगवान देवता कि मनुष्य—दोनूं नहीं।

१८ सिद्ध भगवान सूक्ष्म कि बादर—दोनूं नहीं।

१९ सिद्ध भगवान त्रस कि स्थावर—दोनूं नहीं।

२० सिद्ध भगवान सन्नी कि असन्नी—दोनूं नहीं।

२१ सिद्ध भगवान पर्यापता कि अपर्यापता-दोनूं नहीं।

[illegible]

१ असंयति अव्रती ने दियां कांई होवे—श्री भगवती सूत्र रे पाठ में सतक आठे उदेसे कह्यो असंयति अव्रती नें सूजती असूजती सचित अचित च्यार प्रकार को आहार दियां एकान्त पाप होय निर्जरा नहीं होय।

२ असंजति अव्रती जीवां को जीवणो वांछणो कि मरणो वांछणो—असंजति को जीवणो वांछणो नहीं, मरणो वांछणो नहीं, संसार समुद्र में तिरणो वांछणो ते श्रीवीतरागदेव को धर्म छे।

३ कसाई जीवां ने मारे तिणवेल्यां साधु कसाई नें उपदेश देवे के नहीं देवे—अवसर देखे तो उपदेश देवे हिंसाका खोटाफल कहे।

प्रश्न—जीवां को जीवणो वांछकर उपदेश देवे के कसाई नें तारवा निमित्त उपदेश देवे—

उत्तर—कसाई नें तारवा निमित्त उपदेश देवे ते वीतरागको धर्म छे।

४ कोई वाडामें पशु जानवर टुलिया छे अने साधु विचारामते जाय रह्या छे तो जीवांकी अनुकम्पा आणी छोडे के नहीं छोडे—नहीं

छोडै. किणन्याय, उ० श्रीनिसीथ सूत्रके १२ बारमें उद्देशेमें कह्यो छै अनुकम्पा करी त्रस जीव बांधे बंधावे अनुमोदे तो चौमासी प्राय-श्चित आवै, तथा साधु संसारी जीवांकी सार संभार करै नहीं साधु तो संसारी कर्तव्य त्यागदिया ।

॥ अथ तेरा द्वार ॥

प्रथम मूल द्वार

१ मूल १ दृष्टान्त २ कुण ३ आत्मा ४ जीव ५ अरूपी ६ निरवद्य ७ भाव ८ द्रव्य गुण पर्याय ९ द्रव्यादिक १० आज्ञा ११ जिनय १२ तलाव १३ ए तेरा द्वार जांणवा, प्रथम मूल-द्वार कहे है—जीव ते चेतना लक्षण, अजी-वते अचेतना लक्षण, पुन्य ते शुभ कर्म, पापते अशुभ कर्म, कर्म ग्रहै ते आस्रव, कर्म रोके ते संवर, देशथकी कर्म तोडी देशथी जीव उज्वल थाय ते निर्जरा, जीव संघाते शुभा-शुभ कर्म बंध्या ते बंध, समस्त कर्मों से मु-कावे ते मोक्ष ।

(इति प्रथम द्वार सम्पूर्ण)

सोनारो गहणो भांजी भांजी और और आकारे घड़ावे तो आकारनों विनाश होय सोनारो विनाश नहीं, ज्यू पुद्‌गल की पर्याय पलटे पण पुद्‌गल गुण को विनाश नहीं

पुन्यते शुभ कर्म, पापते अशुभ कर्म, ते पुन्य पाप ओलखवानें पथ्य अपथ्य आहार नो दृष्टान्त कहै है. कदेक जीवके पथ्य आहार घटे और अपथ्य आहार वधै, तो जीव के निरोगपणों घटे अने सरोगपणों वधै कदे जीवरे अपथ्य आहार घटै पथ्य वधै तब जीवरे सरोगपणो घटै अने निरोगपणों वधै पथ्य अपथ्य दोनूं घटजाय तो प्राणी मरण पावें, ज्यों जीवके पुन्य घटै अरुपाप वधै तो सुख घटै अने दुख वधै, कदेजीवरै पुन्य घटै अरु पाप वधै तो सुख घटै अने दुख वधैं, पुन्य पाप दोनूं क्षय होय तो जीव मोक्ष पावें, कर्म आवते आस्रव ते ओलखवानें तीन दृष्टान्त पांच कारण कहे है

१ प्रथम कारण (कथन)

१ तलाव रे नालो ज्युं जीवरे आस्रव

२ हवेली के बारणो ज्यों जीवरे आस्रव

३ नाव के छिद्र ज्यों जीवरे आस्रव

२ दूजो कहण (कथन)

१ तलाव अनें नालो एक ज्यूं जीव आस्रव ए
२ हवेली बारणों एक ज्यों जीव आस्रव ए
३ नाव अनें छिद्र एक, ज्यूं जीव आस्रव ए

३ कर्म आवे ते आस्रव तें ओलखवानें तीजो का
कहे छे

१ पाणी आवे ते नालो ज्यों कर्म आवे
आस्रव ।
२ मनुष्य आवे ते बारणों ज्यों कर्म आवे
आस्रव
३ पांणी आवे ते छिद्र ज्यों कर्म आवे
आस्रव ।

४ भ्रम कह्यां थकां कोई कर्म अनें आस्रव ए
सरधे तेहनें दोय सरधावानें चौथो का
कहे छे ।

१ पांणी अनें नालो दोय ज्यों कर्म अनें
आस्रव दोय ।
२ मनुष्य अनें बारणों दोय ज्यों कर्म अनें
आस्रव दोय ।
३ पांणी छिद्र दोय ज्यों कर्म अनें आस्रव दोय

५ विशेष ओलखवानें पांचमूं कहण कहे छे ।

१ पाणी आवै ते नालो पण पांणी नालो नहीं ज्यों कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं ।
२ मनुष्य आवै ते बारणों पण मनुष्य बारणों नहीं, ज्यों कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं ।
३ पांणी आवै ते छिद्र पण पाणी छिद्र नहीं ज्यों कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं ।

कर्म रोकै ते संवर ते ओलखवानें तीन दृष्टान्त कहै है ।

१ तलाव रो नालो रुंधे ज्यों जीवरे आस्रव रुंधे ते संवर ।
२ हवेलीरो बारणों रुंधे ज्यों जीवरे आस्रव रुंधे ते संवर ।
३ नावरे छिद्र रुंधे ज्यूं जीवरे आस्रव रुंधे ते संवर ।

देशथकी कर्म तोड़ी जीव देशथी उज्वल थायते निर्जरा ओलखवानें तीन दृष्टान्त कहै है ।

१ तलावरो पांणी मोरियादिक करीनें काढ़ै ज्यों जीव भला भाव प्रवर्तावी में कर्म रूपियो पांणी काढ़ै ते निर्जरा ।
२ हवेलीरो कचरो पूंजी नें काढ़ै ज्यों भला भाव

प्रवर्तावी नें जीव कर्म रूपियो कचरो काढ़ै ते निर्जरा।

३ नाव को पांणी उलेची २ नें काढ़ै ज्यूं ...
भला भाव प्रवर्तावी नें कर्म रूपियो पांणी काढ़ै ते निर्जरा ।

जीव संघाते कर्म बंधियाहुयाते बंध, ते थोलखवानैं छव बोल कहै छै ।

१ पहिले बोले कहो स्वामीजी जीव अनें कर्मनीं आदि छै ए बात मिलै अथवा न मिलै। गुरु बोल्या न मिले (प्रश्न) क्यू न मिले गुरु बोल्या ए उपनो नहीं ।

२ दुजे बोलै कहो स्वामीजी पहली जीव पीछे कर्म ए बात मिलै । गुरू बोल्या नहीं मिलै: प्र०—क्यों न मिलै, उ०—कर्म बिना जीव रह्यो किहां मोक्षगयो पाछो आवै नहीं न मिलै ।

३ तीजे बोलै कहो स्वामीजी पहली कर्म पछे जीव ए मिलै, गुरू कहै नहीं मिलै ।
प्रश्न—क्यों न मिलै । गुरू कहै कर्म कियां बिना हुवै नहीं तो जीव बिना कर्म कुण किया ।

२ घृत दूध मीली भूत ज्यों जीव कर्म मीले भूत।

३ धातु माटी मीली भूत ज्यों जीव कर्म मीले भूत।

समस्त कर्मांसि मुकावै ते मोक्ष ते वोतरागे तीन दृष्टान्त कहे छे।

१ घाणीयांदिकानं उपाय करी तिल खल रहित होवे ज्यों तप संजमादि करी जीव कर्म रहित होये ते मोक्ष।

२ जेरणादिक की उपायकरी घृत छाछ रहित होवे ज्यों तप संजमकरी जीव कर्म रहित होये ते मोक्ष।

३ अगनियादिकनं उपायकरी धातु माटी अलग होवे ज्यों तप संजमकरी जीव कर्म रहित होवे ते मोक्ष।

॥ तीजो कुण द्वार कहे छै ॥

जीव चेतन छव द्रव्यां में कुण नव पदार्थां में कुण ? छव द्रव्यां में तो एक जीव नव पदार्थां में पांच। जीव १ आस्रव २ संवर ३ निर्जरा ४ मोक्ष ५

अजीव अचेतन छवमें कोण नवमें कोण— छवमें ५ नवमें ४ छव द्रव्यां में तो धर्मास्ति १ अधर्मास्ति २ आकाशास्ति ३ काल ४ पुद्गलास्ति ५; नव पदार्थां में अजीव १ पुन्य २ पाप ३ बंध ४

पुन्य ते शुभ कर्म छवमें कोण नवमें कोण— छवमें एक पुद्गल, नवमें तीन, अजीव १ पुन्य पाप २ बंध ३

पाप ते अशुभ कर्म छवमें कोण नवमे कोण:— छवमें एक पुद्गल, नवमें तीन, अजीव १ पाप २ बन्ध ३

कर्म ग्रहै ते आस्रव छवमें कोण नवमें कोण— छवमें जीव, नवमें जीव १ आस्रव २

कर्मरोके ते संवर छवमें कोण नवमें कोण—छवमें जीव, नवमें जीव सम्वर

देशथी कर्म तोडी देशथी जीव उज्वल थाय ते निर्जरा छवमें कोण नवमें कोण—छवमें जीव, नव में जीव १ निर्जरा २

बंध छवमें कोण नवमें कोण—छवमें पुद्गल नवमें अजीव १ पुन्य २ पाप ३ बंध ४

मोक्ष छवमें कोण नवमें कोण—छवमें जीव नवमें जीव मोक्ष

चाले ते कोण चालवानों सहाय किणरो—चाले ते जीव पुद्गल, अनें सहाय धर्मास्तिकायनों

थिर रहे कोण थिर रहवानों सहाय किणरो—थिर रहे जीव पुद्गल, सहाय अधर्मास्तिकाय नो

वस्तु ते कोण भाजन किणरो—वस्तु तो जीव पुद्गल भाजन आकाशास्तिकायनों

वरते ते काण वर्ते किण ऊपर—वरते तो काल अने वरते जीव अजीव पर

भोगवे ते कोण अने भोगमें आवे ते कोण—भोगवे ते जीव, भोगमें आवे ते पुद्गल, दोय प्रकारे एक तो शब्दादिक पणें दूजो कर्म पणें

कर्मांरो करता कोण कीधा होवे ते कोण, करता तो जीव किधाहुवा ते कर्म

कर्मांरो उपाय ते कोण उपनां ते कोण—उपाय तो जीव उपना ते कर्म

कर्मांने लगावे ते कोण लाग्या हुवा ते कोण—लगावे ते जीव, लागी ते कर्म

कर्मांनें रोके ते कोण रुक्या ते कोण—रोके तो जीव, रुक्या ते कर्म

कर्मांनें तोड़े ते कोण तूट्या ते कोण—तोड़े ते जीव अने तूट्या ते कर्म

कर्मांनें वांधे ते कोण वंध्या ते कोण—वांधे ते जीव वंधिया ते कर्म

कर्मांनें खपावे ते कोण अने खयया ते कोण—खपावे ते जीव खयया ते कर्म

इति तृतीय द्वारम् ।

॥ अथ चोथो आत्म द्वार कहे छै ॥

जीवचेतन ते आतमा है अनेरो नहीं ।

अजीव अचेतन आतमा नहीं अनेरो है ।

आतमारे काम आवेछे पण आतमा नहीं, कोण कोण काम आवेते कहे है ।

धर्मास्तिकाय अवलम्ब नें चाली छै ।

अधर्मास्तिकाय अवलम्ब नें थिर रहे छै ।

आकाशास्तिकाय अवलम्ब नें बसे छै ।

काल अवलम्बनें कार्य करे छै ।

पुद्गल खाय छै, पीवै छै, पहरे छै, ओढे छै. इत्यादि अनेक प्रकारे आतमारे काम आवे छै पण आतमा नहीं । पुन्यते शुभ कर्म आतमारे शुभ पणे उदय आवे छै पण आतमा नहीं ।

पापते अशुभ कर्म आतमारे अशुभ पणे उदय आवे छै पण आतमा नहीं ।

शुभाशुभ कर्म ग्रहे ते आस्रव आतमा छै अनेरो नहीं ।

कर्म रोके ते सम्बर आतमा छै अनेरो नहीं देसथकी कर्म तोडी देसथकी जीव उजलथाय ते निर्जरा आतमा छै अनेरो नहीं ।

जीव संघाते कर्म बंधाया ते बंध आतमा नहीं अनेरो छै आतमा नें बाध राखीछै पण आतमा नहीं

समस्त कर्मां सें मुकावे ते मोक्ष आतमा छै अनेरो नहीं ।

इति समुच्चे ज्ञानम् ।

॥ अथ पांचमूं जीवद्वार कहे छे ॥

जीव ते चेतन तिण जीवने जीव कहिजे, जीवनें आस्रव कहिजे, जीवनें संवर कहिजे, जीवने निर्जरा कहिजे, जीवनें मोक्ष कहिजे ।

अजीव अचेतननें अजीव कहिजे, पुन्य कहिजे, पाप कहिजे, बंध कहिजे ।

पुन्यते शुभ कर्म तेहनें पुन्य कहिजे; तेहनें अजीव कहिजे, तेहनें बंध कहिजे ।

पापते अशुभ कर्म तेहनें पाप कहिजे, अजीव कहिजे, बंध कहिजे ।

कर्म ग्रहे ते आस्रव कहिजे, तेहनें जीव कहिजे, कर्म रोके ते संवर कहिजे, जीव कहिजे ।

देशथकी कर्म तोड़ी देशथकी जीव उज्वलथाय तेहनें निर्जरा कहिजे, जीव कहिजे ।

जीवसंघाते कर्म बंधाणाते बंध कहिजे, अजीव कहिजे ।

समस्त कर्मसूंमूकावे ते मोक्ष कहिजे, जीव कहिजे हिवे एहनीं बोलखुरा न्याय सहित कहे छे ।

जीवनें जीव किणन्याय कहिजे, सदे काल

जीव छो, वर्त्तमान काल जीव छै, आगामीकाल जीवको जीव रहसी इणन्याय।

अजीव नें अजीव किणन्याय कहिजे; गयेकाल अजीव छो, वर्त्तमानकाल अजीव छै,आगामी काल अजीव को अजीव रहसी।

पुन्य नें अजीव किणन्याय कहिजे; पुन्य ते शुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै।

पाप नै अजीव किणन्याय कहिजे, पाप ते अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै।

आसूव नें जीव किणन्याय कहिजे:—आसूव तो कर्म ग्रहै छै,कर्मांरो करता छै, कर्मांरो उपाय छै उपाय ते जीव ही छै

१ मिथ्यात्व आसूव नें जीव किणन्याय कहिजे विपरीत सरधान ते मिथ्यात्व आसूव जीवरा परिणाम छै।

२ अव्रत आसूव नें जीव किणन्याय कहिजे अत्याग भाव ते जीवरी आशा वांछा अव्रत आसूव छै, ते जीवरा परिणाम छै।

३ प्रमाद आस्रवनें जीव किणन्याय कहिजे, अणउतसाह मणीं ते प्रमाद आस्रव छे, ते जीवरा परिणाम छे।

४ कषाय आस्रव नें जीव किणन्याय कहिजे, कषाय आतमा कही छे, कषाय ते जीवरा परिणाम छे, ते जीव छे।

जोग आस्रव नें जीव किणन्याय कहिजे, जोग आतमा कही छे जोग ते जीवरा परिणाम छे तीनूं ही जोगांरी व्यापार जीवरो छे।

संवर नें जीव किणन्याय कहिजे सामाई पच्चखाण, संयम, संवर, विवेक, विउसग, ए छऊं आतमां कही छे, वलि चारित्र आतमा कही छे, चारित्र जीवरा परिणाम छे इणन्याय।

निर्जरा नें जीव किणन्याय कहिजे, भला भाव प्रवर्तावी नें जीव देशथी उज्वलो हुवै ते जीव छे।

बंध नें अजीव किणन्याय कहिजे, बंध ते शुभ अशुभ कर्म छे, कर्म ते पुद्गल ते अजीव छे।

मोक्ष नें जीव किणन्याय कहिजे ? समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष कहिजे, निर्वाण कहिजे, सिद्ध भग-

वान कहिजे, सिद्ध भगवान ते जीव छै, इकन्द्रि
मोच ने जीव कहिजे ।

इति पंचम द्वारम् ।

॥ अथ छट्ठो रूपी अरूपी द्वार कहे छै ॥

जीव अरूपी छै, अजीव रूपी अरूपी दो
छै, पुन्य रूपी छै, पाप रूपी छै, आस्रव अरूपी है
संवर अरूपी छै, निर्जरा अरूपी छै, बंध रूपी छै, मो
अरूपी छै, हिवे एहनी ओलखना कहे छै ।

जीव नें अरूपी किणन्याय कहिजे ? छव द्रव्य में
जीव नें अरूपी कह्यो छै, पांच वर्ण मावे नहीं ।

अजीव नें अरूपी रूपी दोनूं किणन्याय कहिजे
अजीव का पांच भेद धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति
काल, पुद्गल, इण में च्यार तो अरूपी छ, यां
पांच वर्ण मावे नहीं एक पुद्गल रूपी छै ।

पुन्य नें रूपी किणन्याय कहिजे ? पुन्य ता शु
कर्म छै, कर्म तो पुद्गल छै, पुद्गल तो रूपी छै ।

पाप नें रूपी किणन्याय कहिजे ? पाप तो अशु
कर्म छै, कर्म तो पुद्गल छै, पुद्गल तो रूपी छै ।

आस्रव नें अरूपी किणन्याय कहिजे ? कृष्णादि
छऊं भाव लेश्या अरूपी कही छै ।

मिथ्यात्व आस्रव नें अरूपी किणन्याय कहिजे ?
[illegible]थ्या दृष्टी अरूपी कही छै।

अव्रत आस्रव नें अरूपी किणन्याय कहिजे ?
[illegible]त्याग भाव परिणाम जीवरा अरूपी कह्या छै।

प्रमाद आस्रव नें अरूपी किणन्याय कहिजे ?
[illegible]णउच्छाहपणों ते प्रमाद आस्रव छै, जीवरा परिणाम
[illegible], ते जीव छै, जीवते अरूपी छै।

कषाय आस्रव नें अरूपी किणन्याय कहिजे ?
श्रीठाणांग दसमें ठाणें जीव परिणामीरा दस भेदा
में कषाय परिणामी कह्यो छै, अनें ज्ञान दर्शन
चारित परिणामी कह्या छै, ए जीव छै तिम कषाय
परिणामी जीव छै, कषायपणें परिणमें ते कषाय
परिणामी आस्रव छै, जीव छै, जीवते अरूपी छै।

जोग आस्रव नें अरूपी किणन्याय कहिजे ?
तीनों हीं जोगांरे उठान कर्म बल वीर्य पुरुषाकार
पराक्रम अरूपी छै।

संवर नें अरूपी किण न्याय कहिजे ? अट्ठारे
पाप ठाणांरो विरमण अरूपी कह्यो छै।

निर्जरा नें अरूपी किण न्याय कहिजे ? कर्म
तोड़वारो बल वीर्य पुरुषाकार प्राक्रम अरूपी छै।

बंधनें रूपी किण न्याय कहिजे ? बंधते शुभा-

शुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै।

मोक्ष ने अरूपी किण न्याय कहिजे ? समस्त कर्मां नें मूकावे ते जीव छै, तेहनें मोक्ष कहिजे, निर्वाण कहिजे, सिद्धभगवान कहिजे, सिद्धभगवान ते अरूपी छै।

॥ इति छठो द्वारम् ॥

॥ अथ सातमूं सावद्य निर्वद्य द्वार ॥

जीव तो सावद्य निर्वद्य दोनूं छै। अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं। पुन्य पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, अजीव छै। आस्रव का पांच भेद; मिथ्यात्व आस्रव, अव्रत आस्रव, प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ए च्यार तो सावद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै शुभ जोग निर्वद्य छै। इणन्याय आस्रव सावद्य निर्वद्य दोनूं छै। संवर निर्वद्य छै। निर्जरा निर्वद्य छै। बंध सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै। मोक्ष निर्वद्य छै।

॥ इति सातम द्वारम् ॥

॥ अथ आठमूं भाव द्वार कहै छै ॥

भाव ५ पांच—उदय भाव १, उपशम भाव २, क्षायक भाव ३, क्षयोपशम भाव ४, परिणामिक भाव ५

उदय तो आठ कर्मनों अनें उदय निपन्नरा दोय भेद—जीव उदय निपन्न १, दूजो जीवरे अजीव उदय निपन्न २, तिणमें जीव उदय निपन्नरा ३३ तेतीस भेद; ते कहै छै; च्यार गति ४, छव काय १०, छव लेश्या १६, च्यार कषाय २०, तीन वेद एवं २३ मिथ्याती २४, अव्रती २५, असन्नी २६, अनाणी २७, आहारता २८, संसारता २९, असिद्ध ३०, अकेवली ३१, छद्मस्थ ३२, संजोगी ३३ ।

हिवे जीवरे अजीव उदय निपन्नरा ३० तीस भेद ते कहै है, पांच शरीर ५, पांच शरीर रे प्रयोग परिणाम्यां द्रव्य पांच, ५ पांच वर्ण, २ दोय गंध, ५ पांच रस, ८ आठ स्पर्श, एवं तीस ।

उपशमरा दोय भेद—एक तो उपशम १ दूजो उपशम निष्पन्न भाव, उपशम तो एक मोह कर्म

होय, उपशम निष्पन्नरा दोय भेद, उपशम समकित १, उपशम चारित्र २ ।

क्षायकरा दोय भेद—एक तो क्षायक दूजो क्षायक निष्पन्न, क्षायक तो आठ कर्मांको होय अने क्षायक निपन्नरा १३ तेरा भेद, ते कहै छै ।

केवल ज्ञान १, केवल दर्शन २, आत्मिक सुख ३, क्षायक सम्यक्त्व ४, क्षायक चारित्र ५, अटल अवगाहना ६, अमूर्तिक पणो ७, अगुरु लघु पणो ८ दान लब्धि ९, लाभ लब्धि १०, भोग लब्धि ११, उपभोग लब्धि १२, वीर्य लब्धि १३

क्षयोपशमरा दोय भेद, एक तो क्षयोपशम १. दूजो क्षयोपशम निष्पन्न भाव २, क्षयोपशम तो च्यार कर्म को ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय अन्तराय, अने क्षयोपशम निष्पन्न भावरा ३२ बत्तीस भेद, ते कहै छै ।

ज्ञानावरणीय कर्मरो क्षयोपशम होय तो ८ आठ बोल पावै, केवल वरजी ४ च्यार ज्ञान, ३ तीन अज्ञान, १ एक भणवो गुणवो ।

दर्शनावरणीय कर्मरो क्षयोपशम होय तो आठ बोल पावै, ५ पांच इन्द्री, ३ तीन दर्शन केवल वरजी ।

मोहनीय कर्मरो क्षयोपशम होय तो आठ बोल-पावें, ४ च्यार चारित्र. एक देश व्रत, ३ तीन दृष्टि

अंतराय कर्मरो क्षयोपशम होवे तो आठ बोल पावें ५ पांच लब्धि. ३ तीन वीर्य ।

परिणामिकरा दोय भेद. सादिया परिणामि १०, अनादिया परिणामी २, अनादिया परिणामिकरा १० दस भेद. तिणमें ६ छव द्रव्य धर्मास्ति आदि, ७ सातमूं लोक, ८ आठमूं अलोक, ९ नवमूं भवी १० दसमूं अभवी। अनें सादिया परिणामीरा अनेक भेद जाणवा। गांम नगर गड़ा पहाड़ पर्वत पताल समुद्र द्वीप भुवन विमान इत्यादि अनेक भेद आदि सहित परणामिकरा जाणवा ।

जीव आश्रवी जीव परिणामिकरा १० दस भेद, ते कहे छे ।

गति परिणामी १. इन्द्रिय परिणामी २ कषाय परिणामी ३ लेश्या परिणामी ४, जोग परिणामी ५ उपयोग परिणामिक ६, ज्ञान परिणामी ७ दर्शन परिणामी ८. चारित्र परिणामी ९. वेद परिणामी दस १०

. होवे जीव आश्रय अजीव परिणामीरा १० दस भेद कहे छे ।

बंधन परिणामी १, गई परिणामी २, संठाण परिणामी ३, भेद परिणामी ४ वर्ण परिणामी ५ गन्ध परिणामी ६ रस परिणामी ७ स्पर्श परिणामी ८ अगुरु लघु परिणामी ९ शब्द परिणामी १० जीव में भावपावे ५ पांचूंही, अजीव पुन्य पाप बन्ध भाव एक परिणामिक।

आस्रव भाव दोय—उदय, परिणामिक

संवर भाव ४ च्यार, उदय बरजी नें

निर्जरा भाव ३ तीन, क्षायक, क्षयोपसम परिणामिक।

मोक्ष भाव २ दोय क्षायक परिणामिक।

इति अष्टम द्वारम्।

॥ अथ नवमूं द्रव्य गुण पर्याय द्वार ॥

द्रव्य तो जीव असंख्य प्रदेशी गुण ८ आठ ज्ञान दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य, उपयोग, सुख, दुख ए एक एक गुणांरी अनन्त अनन्त पर्याय।

ज्ञानें करी अनन्ता पदार्थ जाणे तिणथूं अनन्ती पर्याय।

दर्शनें करी अनन्ता पदार्थ सरधे तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

चारित्र थी अनन्त कर्म प्रदेश रोके तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

तपकरी अनन्त कर्म प्रदेश तोड़े तिणसूं अनन्त पर्याय ।

वीर्यनीं अनन्ती शक्ति तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

उपयोग थी अनन्त पदार्थ जाणें देखे तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

सुख अनन्त पुन्य प्रदेशसूं अनन्त पुद्गलिक सुख वेदे तिणसूं अनन्ती पर्याय । वलि अनन्त कर्म प्रदेश अलग हुयां थी अनन्त आत्म सुख प्रगटे तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

दुःख अनन्त पाप प्रदेशसूं अनन्त दुःख वेदे तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

अजीव नां पांच भेद—धर्मास्ति, अधर्मास्ति आकाशास्ति, काल, पुद्गलास्ति यांकोद्रव्य गुण पर्याय कहे छै ।

द्रव्य तो एक अधर्मास्ति, गुण थान्हानों साझ

पर्याय अनन्ता पदार्थ नें चालवानीं सहाय तिणमें
अनन्त पर्याय ।

द्रव्य तो एक अधर्मास्ति, गुण थिर रहेवा नीं
सहाय, पर्याय अनन्ता पदार्थ नें थिर रहवानीं साम
तिणमें अनन्ता पर्याय ।

द्रव्य तो एक आकाशास्ति, गुण भाजन, पर्याय
अनन्त पदार्थों नों भाजन तिणमें अनन्त पर्याय
द्रव्य तो काल, गुण वर्तमान, पर्याय अनन्त
पदार्थ पर वर्ते तिणमें अनन्तो पर्याय ।

द्रव्य तो एक पुद्गल, गुण अनन्ता गलै अनन्त
मिलै तिणमें अनन्तो पर्याय ।

द्रव्य तो पुन्य, गुण जीवके शुभ पणे उदय आवै
पर्याय अनन्ता प्रदेश शुभ पणे उदय आवै सुख करै
तिणमें अनन्त पर्याय ।

द्रव्य तो पाप, गुण जीवरे अनन्ता प्रदेश अशुभ
पणे उदय आवै, अनन्ता दुःख करै तिणमें अनन्त
पर्याय ।

द्रव्य तो आस्रव गुण कर्म ग्रहे पर्याय अनन्ता
कर्म प्रदेश ग्रहे तिणमें अनन्तो पर्याय ।

द्रव्य तो संवर गुण कर्म रोकवानी, पर्याय अनन्
ता कर्म प्रदेश रोके तिणमें अनन्तो पर्याय ।

द्रव्य तो निरजरा गुण देशथकी कर्म प्रदेश तोड़ी देश थी जीव उजली थाय, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश तोड़ै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो बंध, गुण जीवनें बांध राखवारो, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश कारी बांधे तिणसूं अनंती पर्याय।

द्रव्य तो मोक्ष, गुण आत्मिक सुख, पर्याय अनंत कर्म प्रदेश क्षयहुयां अनंत सुख प्रगटे तिणसूं अनंती पर्याय।

इति नवमूं द्वारम्।

अथ दसमूं द्रव्यादिकरी ओलखना द्वार।

जीवनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेतथी लोक प्रमाणे, कालथकी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुणथी चेतन गुण।

अजीव नें पांचा बोलांकरी ओलखीजे

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेतथी लोकालोक

प्रमाणे, कालथकी आदि अंत रहित, ...
रूपी अरूपी दोनूं, गुणथकी अचेतन गुण।

पुन्य नें पांचां बोलांकरी ओलखीजे

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य, खेत्रथकी लोकांतर्वे,
कालथकी आदि अंत रहित, भावथकी रूपी
गुणथकी जीव के शुभ पणे उदय आवे।

पाप नें पांचां बोलांकरी ओलखीजे

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य, खेत्रथी लोकांतर्वे
कालथकी आदि अंत रहित, भावथकी रूपी.
गुणथकी जीवरे अशुभ पणे उदय आवे ।

आस्रव नें पांचां बोलांकरी ओलखीजे ।

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य, खेत्रथी लोकांतर्वे,
कालथकीरा ३ तीन भेद-एकेक आस्रवी
आदि नहीं अंत नहीं ते अभव्य आस्री.
आस्रवरी आदि नहीं पण अंत छे ते भव्य
आस्रवी, एकेक आस्रवरी आदि छे अंत छे
ते पड़वाई आस्री, तेहनीस्थिति जघन्य अंतर
मुहूर्त उत्कृष्टी देस ऊणी अर्ध पुद्गल परावर्तन,
भावथकी अरूपी, गुणथकी कर्म ग्रहवानों गुण।

संवर नें पांचां बोलांकरी ओलखीजे ।

द्रव्यथकी तो असंख्याता द्रव्य, खेत्रथी लोक

कर्नें, कालथकी आदि अंत सहित, भावथी अरूपी, गुणथकी कर्म रोकवारो गुण ।

निर्जरा नें पांचां बोलांकरी ओळखीजे ।

द्रव्यथकी अकाम निर्जराका तो अनंता द्रव्य सकाम निर्जराका असंख्याता द्रव्य, खेत्रथी जीवांकनें, कालथकी आदि अंत सहित भावथकी अरूपी, गुणथकी कर्म तोड़वारो गुण ।

बंधनें पांचां बोलां ओळखीजे ।

द्रव्यथी अनंता द्रव्य, खेतथकी जीवांकानें, काल थकी आदि अंत सहित, भावथकी रूपी, गुणथकी कर्म बांध राखवारो ।

मोक्षनें पांचां बोलांकरी ओळखीजे ।

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य, खेतथकी जीवांकनें, कालथकी एकेक सिद्धांरी आदि अंत नहीं, एकेक सिद्धां आदि छै पण अंत नहीं, भावथकी अरूपी, गुणथकी आत्मिकसुख ।

धर्मास्तिकायनें पांचां बोलांकरी ओळखीजे ।

द्रव्यथकी एक द्रव्य, खेत्रथी लोक प्रमाणे काल, थकी आदि अंत रहित, भावथकी अरूपी, गुणथकी जीव पुद्गल नें चालवारो साझ ।

अधर्मास्तिकाय में पांचां बोलांकरी ओलखीजै।
द्रव्य थकी एक द्रव्य, खेत्रथी लोक प्रमाणे,
थकी आदि अंत रहित, भावथकी अरूपी,
थकी जीवपुद्गलनें थिर रहवानों सहाय।

आकाशास्ति कायनें पांचां बोलांकरी ओलखीजै।
द्रव्यथकी एक द्रव्य, खेत्रथकी लोक अलो
प्रमाणे, कालथकी आदि अंत रहित, भावथकी
अरूपी गुणथकी भाजनगुण।

काल नें पांचां बोलांकरी ओलखीजै।
द्रव्यथकी अनंता द्रव्य, खेत्रथी अढाई द्वीप
प्रमाणे, कालथकी आदि अंत रहित, भावथकी
अरूपी, गुणथकी वर्तमान गुण।

पुद्गलास्तिकायमें पांचां बोलांकरी ओलखीजै।
द्रव्यथकी अनंता द्रव्य, खेत्रथकी लोक प्रमाणे
कालथकी आदि अंत सहित, भावथकी रूपी
गुणथकी गलै मलै।

॥ इति दशम् द्वारम् ॥

॥ अथ एकादशमूं आज्ञा द्वार कहे छै

जीव आज्ञा मांही बाहर दोनूं है, ते
न्याय ? सावद्य कर्तव्य आसरी आज्ञा बाहर

अने निर्वद्य वर्त्तवा आमरी आज्ञा मांहि है। अ-जीव आज्ञा मांहि कि बाहर? अजीव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं नहीं, ते किणन्याय? अजीव है, अचेतन है, जड़ है।

पुन्य, पाप, बंध, ए तीनूं आज्ञा मांही; बाहर नहीं अजीव है।

आस्रव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं है; किणन्याय? आस्रवना पांच भेद—मिथ्यात १, अव्रत २, प्रमाद ३, कषाय ४, ए च्यार तो आज्ञा बाहर है। जोग आस्रव का दोय भेद—शुभ जोग वर्त्तता निर्जरा हुवै तिण अपेक्षाय आज्ञा मांहि है। अशुभ जोग आज्ञा बाहर।

संवर आज्ञा मांहि है; ते किण न्याय? संवरथी कर्म रुकै ते श्री वीतराग की आज्ञा मांहि है।

निर्जरा आज्ञा मांहि है; ते किणन्याय? कर्म तोड़वारा उपाय श्री वीतराग की आज्ञा में है।

मोक्ष आज्ञा मांहि है; ते किण न्याय? सकल कर्म खपावारी श्रीवीतरागकी आज्ञा है।

॥ इति एकादशम द्वारम् ॥

॥ अथ वारमूं ज्ञेय द्वार कहे छे ॥

जीवनें जीव जाणवो। अजीवनें अजीव जाणवो। पुन्यनें पुन्य जाणवो। पापनें पाप जाणवो। आस्रव जाणवो। संवर नें संवर जाणवो। निर्जरा निर्जरा जाणवो। बंधनें बंध जाणवो। मोक्षनें मे जाणवो। एह नव पदार्थ जाणवा योग कह्या इणां में आदरवा जोग ३ तीन, संवर १, निर्जरा मोक्ष ३, बाकी ६ छाडवा जोग छे।

जीवने छाडवा जोग किण न्याय कहिजे आपरा जीवको भाजन करी किणी जीव ऊपर मम भाव न करवो।

अजीव छांडवा जोग किणन्याय कहिजे ? किणी अजीव पर ममत्व भाव न करवो।

पुन्य पाप छांडवा जोग किण न्याय कहिजे! शुभ अशुभ कर्म छांडवा जोग छे।

आस्रव ने छांडवा जोग किणन्याय कहिजे! आस्रव कर्म ग्रहे छे। कर्मांरो उपाय छे। शुभाशुभ कर्म आवाना वारणां छे। ते छांडवा जोग छे।

कर्म रोके ते संवर आदरवा जोग छे।

देशथकी कर्म तोड़ी, देशथकी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा आदरवा जोग छे।

बंधनें छांडवा जोग किणन्याय कहिजे ? शुभाशुभ कर्म जीवके बंध रह्या छै ते बंध तो छांडवारो जोग है ।

मोक्ष नें आदरवा जोग किणन्याय कहिजे ? समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष आदरवा जोग छै ।

॥ इति द्वादशम् द्वारम् ॥

॥ अथ तेरमूं तलाव द्वार कहे छे ॥

तलाव रूपी जीव जाणवो । अतलाव ते तलाव रूपी अजीव जाणवो । निकलता पाणी रूप पुन्य पाप जाणवो । नाला रूप आस्रव जाणवो । नाला बन्ध रूप संवर जाणवो । मोरी करीने पाणी काढे ते निर्जरा जाणवो । मांहिला पाणी रूप बंध जाणवो । खालो तलाव रूप मोक्ष जाणवो ।

यह तेरा द्वार तन्त किया श्रीभीखनजी स्वंत

॥ इति तेराद्वार सम्पूर्ण ॥

॥ अथ बावनबोल को थोकड़ो ॥

१ पहिले बोले ८ आत्मां में कर्मांरी करता कित्ती ? रोकता कित्ती ? तोड़ता कित्ती आत्मा ? करता तो ३ तीन आत्मा—कषाय, जोग, दर्शन । रोकता २ दोय आत्मा—दर्शन, चारित्र । तोड़ता एक जोग आत्मा ।

मांधै पाठीडी; पजीव, पुन्य, पाप, बंध, नहीं। पास्रव ३ (तीन) पात्मा-कषाय, दर्शन। संवर २ (दोय) पात्मा तथा चारित्र। निर्जरा (५) पांच पात्मा, कषाय, चारित्र, टली। मोक्ष पदार्थ रो पात्मा।

१३ तेरमें बोल—छव में नव में कोण ?

उदय छव मे कोण, नवमे कोण ?—छवमें पुद्गल नवमें च्यार—पजीव, पुन्य, पाप, बंध।

उपशम छवमें कोण नव मे कोण ?—छवमें पुद्गल, नवमे तीन पजीव, पाप, बंध

क्षायक छवमें कोण ? नवमे कोण ?—छवमें पुद्गल, नवमें च्यार— पजीव, पुन्य, पाप बंध।

क्षयोपशम छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें तीन—पजीव, पाप, बंध।

परिणामिक छवमें कोण ? नवमें कोण ? —छवमें छव, नवमें नव।

१४ चौदमें बोलि उदय निपन्न छवमें कोण ? नवमें कोण ?—यावत परिणामिक निपन्न छवमें नवमें कोण ?—

उदय निपन्न छवमें कोण ? नवमें कोण ? छव

मैं जीव, नवमें जीव, आस्रव। उपशम निष्पन्न छवमें कोण? नवमें कोण?—छवमें जीव; नवमें जीव, संवर। क्षायक निष्पन्न छवमें कोण? नवमें कोण?—छवमें जीव, नवमें ४ जीव संवर, निर्जरा मोक्ष। क्षयोपशम निष्पन्न छवमें कोण? नवमें कोण—छवमें जीव; नवमें ३ जीव, संवर, निर्जरा।

परिणामिक निष्पन्न छवमें कोण? नवमें कोण?—छवमें छव, नवमें नव।

१५ पंदरमें बोलें आठ कर्मनों उदय, छवमें, नवमें कोण?—ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय, ए च्यार कर्मनों उदय तो छवमें पुद्गल; नवमें तीन;—अजीव, पाप, बंध। वेदनी, नाम, गोत, आयु ए च्यार कर्मनों उदय छवमें पुद्गल, नवमें च्यार, अजीव, पुन्य, पाप, बंध।

१६ सोलमें बोलें मोहनीय कर्मनों उपशम: छवमें कोण? नवमें कोण? छवमें पुद्गल, नवमें तीन, अजीव, पाप, बंध। बाकी सात कर्म नों उपशम होवे नहीं।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्त-

राय, ए च्यार कर्मनों क्षायक; छवमें कोण, नवमें कोण ?—छवमें पुद्गल; नवमें तीन—अजीव, पाप, बंध।

वेदनी नाम गोत ए तीन कर्मनों क्षायक छवमें कोण ? नवमें कोण ?—छवमें पुद्गल नवमें च्यार-अजीव, पुन्य, पाप, बंध।

आयुषको क्षायक छवमें कोण ?—नवमें कोण! छवमें पुद्गल; नवमें तीन—अजीव, पुन्य, बंध।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय ए च्यार कर्मनों क्षयोपशम; छवमें कोण? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें तीन—अजीव, पाप, बंध। बाकी च्यार कर्मरो क्षयोपशम होवे नहीं।

१७ सतरमें बोले आठकर्मना निष्पन्ननों विगत।

छव कर्मनों उदय निष्पन्न; छव में कोण? नवमें कोण ?—छवमें जीव, नवमें जीव।

मोहनीय, नाम, ए दोय कर्म नो उदय निष्पन्न, छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव।

सात कर्म नों तो उपशम निपन्न होवे नहीं, एक मोहनीय कर्मनों उपशम निष्पन्न होवे; ते

उदय में भाव, नवमें भाव, संवर।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्मारो क्षायक निष्पन्न दशमें भाव, नवमें भाव निर्जरा। एक मोहनीय कर्मारो क्षायक निष्पन्न दशमें भाव, नवमें भाव, संवर, निर्जरा। यार्कों च्यार अघातिया कर्मको दशमें भाव, नवमें भाव, मोक्ष। च्यार अघातिक कर्मारो तो क्षयोपशम निष्पन्न होवे नहीं। ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्मको क्षयोपशम निष्पन्न तो दशमें भाव, नवमें भाव, निर्जरा। मोहनीय कर्मको क्षयोपशम निष्पन्न दशमें भाव; नवमें भाव संवर, निर्जरा।

१८ अठारमें बोलें आठ कर्म नों बंध आदिसत्ता, किसे किसे गुण ठाणे—

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, नाम, गोत ए पांच कर्मनों बंध पहिला गुण ठाणांसे दसमां गुण ठाणां ताईं।

मोहनीय कर्मनों बंध पहिला गुण ठाणांसे नवमां गुण ठाणां ताईं।

आयु कर्मनो बंध पहिला गुण ठाणांसे सातमां ताईं। तीजो गुण ठाणों टाली।

वेदनी कर्मनों बंध तेरमां गुण ठाणां तांई।

ज्ञानावरणी, दर्शनांवरणी, अन्तराय, ए ...
कर्मनो उदय अने उदय निष्पन्नती सत्ता ...
गुणठाणां तांई।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयुष, ए चार ...
उदय अने उदय निष्पन्नती सत्ता चौदमा ...
ठाणां तांई।

मोहनीय कर्मनो उदय निष्पन्न पहिला ...
ठाणांसे दशमा गुणठाणां तांई। अने ...
इग्यारमा गुणठाणां तांई।

१६ उगणीसमें बोले चौदे गुणठाणां को ...
उपशम क्षायक क्षयोपशम निष्पन्न कहै छै, ज्ञाना...
वरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, ए तीन कर्म...
उदय निष्पन्न तो पहिलासे बारमां तांई।

दर्शन मोहनीयनों उदय निष्पन्न पहिला...
सातमा तांई।

चारित्र मोहनीय नों उदय निष्पन्न पहिला ...
दशमा तांई।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयुष, ए चार कर्म नों ...
निपन्न पहिला से चौदमा तांई।

सात कर्म नों तो उपशम निपन्न होवे न...

त्र मोहनीय कर्मनों होय । जिणसें दर्शन मोह-
नियनीं उपशम निष्पन्न तो चौथा सें इग्यारमा ताईं ।
चारित्र मोहनीयको इग्यारमें गुण ठाणें छै । ज्ञाना-
वरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय ए तीन कर्मनीं खायक
निष्पन्न तेरमें चौदमें गुण ठाणें तथा श्री सिद्ध भगवान
में । दर्शन मोहनीय को खायक निष्पन्न चौथा गुण
ठाणां सें चौदमा ताईं । अने चारित्र मोहनी को
बारमा सें चौदमा ताईं तथा श्री सिद्ध भगवान
मांहि ।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयु ए च्यार कर्मनीं खायक
निष्पन्न गुणठाणां में पावै नहीं; श्री सिद्ध भगवान
में पावै ।

ज्ञानावरणी दर्शनावरणी अन्तराय ए तीन
कर्मनीं क्षयोपशम निष्पन्न तो पहिला सें बारमा गुण
ठाणां ताईं ।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपशम निष्पन्न पहिला सें
सातमा गुण ठाणां ताईं ।

चारित्र मोहनीयनीं क्षयोपशम निष्पन्न पहिला सें
दसमा गुण ठाणां ताईं ।

च्यार अघाति कर्मनो क्षयोपशम निष्पन्न होवे
नहीं ।

२० बीसमें बोलें आठ कर्मामें पुन्य कितना कितना तथा पुन्य कितना से लागे ... से लागे ?—

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय अन्तराय च्यार कर्म तो एकान्त पाप छै।

वेदनी, नाम, गोत्र आयु ए च्यार कर्म पुन्य दोनूं ही छै।

मोहनीय कर्म में तो पाप लागे अमे नाम से पुन्य लागे बाकी छव कर्म मे पुन्य पाप ... नहीं लागे।

२१ इकीस में बोलें आस्रवना बीस भेद तथा संवर ना बीस भेद किसे किसे गुणठाणें ... कितना पावै ?

आस्रव के २० बीस भेदों की विगत।

पहिले तथा तीजे गुणठाणें री बीस पावै, दूजे चौथे पांचमें गुणठाणें १९ उगणीस पावै मिथ्यात टल्यो। छठे गुणठाणें १८ अठारे मिथ्यात्व तथा अव्रत आस्रव टल्यो। ... से दसमा गुणठाणा तांई ५ पांच ...

पावै कषाय, जोग, मन वचन, काया, ए पांच जाणवा। इग्यारमें बारमें तेरमें च्यार पावै कषाय टलो। चौदमें आस्रव पावै नहीं। हिवै संवरके बीस बोलांकी विगत—पहिलासे चउथा गुणठाणां तांई तो संवर पावै नहीं, पांचमें गुणठाणें एक समकिते संवर पावै, सम्पूर्ण व्रत ते संवर पावै नहीं।

देस व्रत पावै ते लेखव्यो नहीं।

छट्ठै गुणठाणें २ (दोय) पावै समकिते व्रतते, सातमासे दशमा गुणठाणां तांई १५ [पंद्रह] संवर पावै। अकषाय, अजोग, मन, वचन, काया, ए पांच टल्या।

इग्यारमेंसे तेरमें गुणठाणां तांई १६ सोलह संवर पावै; अजोग, मन, वचन, काया, ए च्यार टल्या।

चौदमें गुणठाणें २० बीसूंही संवर पावै।

२२ बाईस में बोले चौदागुणठाणां किसो भाव किसी आत्मा ?

पहिलो दूजो तीजो गुणठाणों तो भाव दोय— क्षयोपशम परिणामिक, आत्मादर्शन। चौथो

गुणठाणो भाव च्यार—उदय, वरजीमें, आत्मा-
दर्शन।

पांचमूं गुणठाणो भाव दोय—क्षयोपशम परि-
णामिक, आत्मा देशचारित्र।

छट्ठासे दशमा गुणठाणां तांई भाव दोय—
क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा चारित्र। इग्या-
रमूं गुणठाणो भाव दोय—उपशम परिणामिक,
आत्मा उपशम चारित्र।

बारमूं गुणठाणो भाव दोय—क्षायक परिणामिक,
आत्मा क्षायक चारित्र।

तेरमूं गुणठाणो भाव दोय—क्षायक परिणामिक,
आत्मा उपयोग।

चउदमों गुणठाणो भाव परिणामिक आत्मा
द्रव्यरी।

२३ तेवीसमें बोले धर्म अधर्म किसो भाव किसी
आत्मा ?

धर्म भाव ४ (च्यार) उदय टालो, आत्मा तीन,
दर्शन, चारित्र, जोग। अधर्म भाव दोय उदय
परिणामिक, आत्मा ३ तीन, कषाय, जोग, दर्शन।

२४ चोवीसमें बोले दया हिन्सा किसो भाव किसी
आत्मा।

२८ श्रठावीसमें बोले १२ (बारे) व्रत किसो भाव किसो श्रात्मा ?

भाव क्षयोपशम परिणामी, श्रात्मा देशचारित्र

२८ उगणतीसमें बोले समकित मिथ्यात्व किसो भाव किसो श्रात्मा ? समकित भाव श्रार— उदय, बरजीने, श्रात्मा. दर्शन। मिथ्यात्व भाव उदय परिणामी, श्रात्मा दर्शन।

३० तीसमें बोले ज्ञान श्रज्ञान किसो भाव किसो श्रात्मा—

ज्ञान भाव ३ (तीन) क्षायक क्षयोपशम परिणामी, श्रात्मा, उपयोग, ज्ञान। श्रज्ञान भाव २ (दोय) क्षयोपशम परिणामिक श्रात्मा उपयोग

३१ इकत्तीसमें बोले द्रव्यजीव भावजीव किसे भाव किसो श्रात्मा।

द्रव्य जीव भाव एक परिणामिक, श्रात्मा द्रव्य भाव जीव भाव पांचोंही, श्रात्मा द्रव्य बरजीने सात। छठमें नवमें का बोल कहणा।

३२ बत्तीसमें बोले श्रठारे पाप ठाणांगों उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम छठमें कोण नवमें कोण।

छठमें पुद्गल, नवमें तीन श्रजीव. पाप, बंध।

३३ तेतीसमें बोले अठारै पाप ठाणारो उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम निष्पन्न द्रव्यमें जीव नवमें जीव ।

उदय निष्पन्न द्रव्यमें जीव नवमें जीव आस्रव ।
उपशम निष्पन्न द्रव्यमें जीव नवमें जीव संवर ।
सतरा (१७) बोलाँ क्षायक निष्पन्न द्रव्यमें जीव नवमें जीव संवर, एक मिथ्या दर्शन शल्य को द्रव्यमें जीव नवमें जीव संवर निर्जरा क्षयोपशम निष्पन्न द्रव्यमें जीव नवमें जीव संवर निर्जरा ।

३४ चौतीसमें बोले बारह व्रत को द्रव्य क्षेत्र काल भाव सारूं तेहनी विगत ।

पहिला व्रतसे आठमा व्रत तांई तो द्रव्य थकी आगार राखै ते द्रव्य उपरान्त त्याग, क्षेत्रथी सर्व क्षेत्रांमें, काल थकी जावजीव, भाव थकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा । नवमें व्रत द्रव्य क्षेत्र आगार परिमाणे, कालथकी एक मुहूर्त भाव थी राग द्वेष रहित, उपयोगसहित, गुण थकी संवर निर्जरा । दशमूं व्रत द्रव्य क्षेत्र भाव गुणतो आगार परि-

दर्शन मोहनीय को क्षायक निष्पन्न चौथा से चौदमें गुणठाणें तथा सिद्धांमें ।

चारित्र मोहनीय को क्षायक निष्पन्न बारमें तेरमें चौदमें गुणठाणें ।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपशम निष्पन्न पहिला से सातमां गुणठाणें तांई ।

चारित्र मोहनीयको क्षयोपशम निष्पन्न पहिला से दशमां गुणठाणां तांई ।

२७ सेंतीसमें बोलें आठ आतमांमें मूलगुण कितनी उत्तर गुण कितनी—

मूल गुण एक चारित्र आत्मा, उत्तर गुण एक जोग आत्मा । बाकी दोनूं नहीं ।

२८ अड़तीसमें बोलें आठ आत्मा किसे भाव किसी आत्मा—आत्मातो आप आपरी, द्रव्य आत्मा तो भाव एक परिणामी, कषाय आत्मा भाव दोय उदय परिणामी, जोग आत्मा भाव च्यार उपशम वरजीने, उपयोग ज्ञान वीर्य ए तीन आत्मा भाव तीन क्षायक क्षयोपशम परिणानिक दर्शन आत्मा भाव पांचोंही ।

चारित्र आतमां भाव च्यार उदय वरजीं ।

जोड़ा, स्पर्श। भाव घी पांच श्रुत चचु प्राण रस स्पर्श एवं, कवमें कोण नवमें कोण? भाव इन्द्री कवमें जीव नवमें जीव निर्जरा ते किण-न्याय दर्शनावरणी कर्म चय उपशम थयां थी जीव इन्द्रिय पणों पाम्यो इण न्याय।

४ चमालीसमें बोलै जीव परिणामीरा १० बोल किसे भाव किसी आत्मा।

गति परिणामी भाव होय, उदय परिणामी, आत्मा अनेरी। कषाय परिणामी भाव उदय परिणामिक, आत्मा कषाय वेद परिणामी भाव उदय परिणामी आत्मा कषाय तथा अनेरी। योग परिणामी लेशपरणामी भाव च्यार उपशम वरजीनें आत्मा योग। इन्द्रिय परिणामिक भाव होय, चयोपशम परिणामी, आत्मा उप-योग। ज्ञान परिणामिक उपयोग परिणामिक भाव तीन चायक चयोपशम परिणामी आत्मा आप आपरी। दर्शन परिणामी भाव पांचोंही, आतमां दर्शन। चारित्र परिणामी भाव च्यार उदयवरजीनें आत्मा, चारित्र।

४५ पैंतालीसमें बोलै जीव परिणामीरा १० (दश) बोल कवमें कोण नवमें कोण।

गति परिणामी छवमें जीव नवमें जीव, आ
पेद परिणामी कषायपरिणामी छवमें जीव न
जीव आस्रव। योग लेश परिणामी छ
जीव नवमें जीव आस्रव निर्जरा। द
परिणामी छवमें जीव नवमें जीव आ
संवर निर्जरा। इन्द्रिय उपयोग ज्ञान प
णामी छवमें जीव नवमें जीव निर्ज
चारित्र परिणामी छवमें जीव नवमें
संवर।

४६ छयालीसमें बोले चौदह गुणठाणांवाला
शरीर कितना पावे।

पहिला से पांच गुणठाणा तांई तो शरी
च्यार पावे आहारिक टलयो, छठे गुण
शरीर पावे पांचों ही, सातमां गुणठाणा
चौदमा गुणठाणा तांई शरीर पावे ३ (ते
औदारिक तैजस कार्मण। पांच शरीर
स्पर्शी के आठ स्पर्शी? च्यार शरीर तो
स्पर्शी है कार्मण चो स्पर्शी है।

पांच शरीर जीव के अजीव? अजीव है।

४७ सातवालीसमें बोले २४ (चौबीस) दंडक
लेस्या कितनी पावे।

सात नारकी १ तेउ २ वायु ३ वेइन्द्री ४ तेइन्द्री ५ चौइन्द्री ६ असन्नी मनुष्य ७ असन्नी तिर्यंच ८ यांमें तो ३ माठी लेश्या पावे।

पृथ्वीकाय १ अपकाय १ वनस्पतीकाय १ भवन पतिका १० वानव्यंतर १ यां चौदह दण्डकां में लेश्या पावे ४ पद्म शुक्ल वरजीनें। जोतषी अनें पहिला दूजा देवलोक का देवता में लेश्या पावे १ तेजू। तीजा से पांचमा ताई पद्म। छट्ठा देवलोक से सरवार्थ सिद्ध ताई पावे १ शुक्ल। सन्नी मनुष्य सन्नी तिर्यंच में लेश्या पावे छव। सर्व जुगलिया में ४ च्यार पद्म शुक्ल टली।

= अड़चालीसमें बोले अजीव नां चौदह भेद ऊंचा नीचा तिरछा लोक में कितना? ऊंचो लोक अनें अढ़ी द्वीप मांहि १० पावै। धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्तिको खंध अनें काल ए च्यार टल्या।

नीचो लोक अढ़ाई द्वीप में ११ (इग्यारे) पाइ काल चौर बंध्यो। ऊंचो दिशिमें ११ (इग्यारे) पावे नीचो दिशिमें १० पावै।

४९ एगुणपचासमें बोले (च्यार) गति ५ (पांच) जाति ६, छह काय १५ चौदह भेद जीवका

१ श्रावक की पदवी भाव २ (दोय) क्षयोपशम परिणामी आत्मा देशचारित्र।

१ समदृष्टी की पदवी भाव ४ च्यार उदय वरजी आत्मा दर्शन।

उगणीस पदवी तो छवमें जीव नवमें जीव समदृष्टीकी अने केवली की पदवी छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा। साधु श्रावक की पदवी छवमें जीव नवमें जीव संवर।

२ बावनमें बोले नव तत्वका ११५ (एकसइ पंदरह) बोल की।

जीव कितना—जीव तो ७० सत्तर तेहनी विगत जीवका १४, आस्रवका २०, संवरका २०, निर्जराका १२, मोक्षका ४, एवं ७०।

अजीव ४५ तेहमें अजीवका १४, पुन्यका ६, (नव,) पापका १८ (अठारा.) बंधका ४ (च्यार,) एवं ४५।

सावद्य कितना निर्वद्य कितना।

निर्वद्य तो ३६, तिहमें निर्जरा का १२ संबर का २०, मोक्षका ४, ए ३६ छत्तीस।

सावद्य १६ तिहमें आस्रवका १६ (मन वचन काया योग ए च्यार टल्या)।

का शुभजोग वरतावे ते निर्जरा धर्म तिणथी पुन्य कर्म लागे छै।

८ गृहस्थ खावे पीवे, दूजाने खुवावे पावे खावतां पीतां प्रते भलो जाणे ते अधर्म अव्रत आस्रवद्वार तेहथी अशुभ पापकर्म लागे छै।

९ सर्व सावद्य जोगका त्यागकरी पंच महा व्रत पाले तेह साधु, नहीं पाले ते असाधु, देसथकी त्यागकरी शुद्ध देवगुरु धर्मकी आराधनाकरे संसार सगपण अनित्य जाणे साधुपणाका भाव राखे श्रमण निग्रंथ की उपासना करे, ते श्रमणोपासक।

१० अठारे पाप सेवाका त्यागकरे, तीन करण तीन जोगसे सावद्य जोग पचखे, साधु तरी पर गोचरीकरे, पडुमा आदरे, पादोगमनादि संथारो करे, साधु पणो नहीं पचखे, तो श्रावक ही है गुणस्थान पांचमो ही पावे उसने साधु नहीं कहिणे आनन्दजीनें संथारानें अंतसमातांई उपासगदसा सूत्रमें गृहस्थ कह्यो है।

११ शुद्ध साधु मुनिराजने सूझतो निर्दोष आहारपाणी दियां कर्म निर्जरा होय, तदा सन्दाय-कारी कर्म ते पुन्य बंधे, परित संसारकरे, शुभ दीर्घ

शतक १ उद्देशे ६ कह्यो छै साधू शुद्ध आहार भोगतां (७) सात कर्म ढीलापाडै तथा दशवैकालिक सूत्रमें शुद्धगति कही छै।

२३ मिथ्याती उपवास बेलादिक तपकरे अथवा साधू मुनिराजनें निर्दोष आहार पाणी वहिरावे तथा मन वचन कायाका शुभ जोग वरतावे जेह निर्वंद्य करणी जिन आज्ञामें छै, तिहथी पाप चयहोय पुन्यबंधे, सूत्र भगवती शतक ८ में उद्देशे १० में ज्ञान बिना क्रिया करे तेहनें देश आराधक कह्यो छै, मेघ कुमार हाथीरा भवमें सुसला ऊपर दयाकरी आपणों पग ऊंचोराख्यो घणोंकष्ट सह्यो तिणसूं प्रति संसार करो मनुष्योंने आयुष बांध्यो, उत्तराध्ययन ७ में मिथ्यातीनें निर्जरा आश्री सुव्रती कह्या छै, भगवती शतक ६ में उद्देशे ३१ में असोचा केवली अधिकारे प्रथम गुणठाणारा धणीरा शुभ अध्यवसाय शुभपरिणाम विशुद्ध लेश्या कही छै।

२४ साधू मुनिराज अचित निर्दोष आहार भोगवे अनें ठंडा वासी आहार पाणीमें वेन्द्री आदि जीव हुवे ते नहीं भोगवे परन्तु वेइन्द्रियादि तथा

यह २५ बोल नवाचार्य कृत प्रश्नोत्तरमांहिथी सूक्ष्म पणे भाख्या छे विशेष तेरावार भर्म विध्वंस-नादि ग्रंथां में वांचवो। ॥ इति ॥

॥ गुलाबचन्द लूणिया ॥

देवगुरु धर्मनों संक्षेप ओलखणा।

देवअरिहन्त गुरुनिर्ग्रन्थ, धर्म केवली प्ररूप्यो, ये तीन अमूल्य रत्न छे याने यथार्थ जाणकर आस्था प्रतीत राखें ते सम्यक्त्व जाणवो।

१ देव अरिहन्त किसा तेहनी ओलखणा कहेछे, अठारे दोष-रहित, बारह गुणां सहित, चौतीस अतिशय पैंतीस वचनातिशय, एक हजार आठ शुभ लक्षणका धारणहार, केवल ज्ञानी, केवल दर्शनी, ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अंतराय, ये च्यार घातिक कर्मों करके रहित, तेरमां गुणस्थान सहित ते वीत-राग प्रभू रागद्वेषरूपी अरि कहितां वैरीने हण्या तिणने अरि-हन्त कहिजे, ज्ञानवंत थया तिणसूं भगवंत कहिजे साधू साध्वी श्रावक श्राविका रूप च्यार तीर्थ प्रवर्तावा तिणसूं तीर्थंकर कहिजे, तेहनी च्यार निक्षेप थकी ओलखणा, जाणवी श्री अनुयोगद्वार सूत्र में कह्यो छे जीव या अजीव तीर्थंकर के नामें हो तो तीर्थंकरका नाम निक्षेपा, स्थापना करे ते स्थापना निक्षेपा. तीर्थंकर होनेवाला जीव तीर्थंकरांका गुणरहित हो वो द्रव्यनिक्षेपा, और तिर्थंकरों का गुण सहित हो वो भाव निक्षेपा है, ये च्यार निक्षेपा कह्या, इण में गुण सहित तरण तारण भाव निक्षेपो छै ते वंदवा जोग छै, बाकी तीन निक्षेपा गुण रहित छै ते वंदवा जोग नहीं गुण, [illegible] में

थारवां, तथा वारवां को ३ तीन हाथको अवगा-
हनां होय। ९ नवग्रैवेयक का देवांकी २ दोय
हाथकी।

पांच अनुत्तर विमानका देवांकी अवगा० १
एक हाथकी।

देवता उत्तर वैक्रियकरै तो जघन्य तो आंगुल
को संख्यातऊं भाग, उत्कृष्टी लाख जोजन की
अवगाहनां जाणो।

वारवां देवलोकसे ऊपरका देव वैक्रियकरै नहीं।

च्यार थावर तथा असन्नीमनुष्यकी जघन्य,
उत्कृष्टो आंगलको असंख्यातवों भाग।

वनस्पतिकायकी अव० जघन्य तो आंगुल को
असंख्यातऊं भाग, उत्कृष्टी हजार जोजन जाझेरी
कमल फूलकी अपेचा।

वेइन्द्री की अव० १२ जोजनकी, उत्कृष्टो।

तेइन्द्री की अवगाहनां ३ कोसकी, उत्कृष्टी।

चौरिन्द्री की अवगा० ४ कोसकी, उत्कृष्टी।

अनें जघन्य आंगल को असंख्यातवें भाग।

तिर्यंच पंचेन्द्री का ५ भेद—

१ जलचर सन्नी असन्नी की १००० जोजन की

जोजन को करे ५ हेमवय, ५ एरणवयका युगलियां को १ कोसकी, ५ हरिवास ५ रम्यक वासकाकी २ कोसकी, ५ देवकुल ५ उत्तरकुरूकाकी ३ कोसकी, ५६ अन्तरद्वीपकाकी ८०० धनुषकी ५ महाविदेह खेत्रका मनुष्यां की ५०० धनुषकी।

सिद्धांकी जघन्य १ हाथ ८ आंगुलकी उत्कृष्टी ३३३ धनुष, १ हाथ, ८ आंगुल की।

॥ इति अवगाहना द्वारम् ॥

संघयन ६ तेहनां नाम वज्र रिषभनाराच १, रिषभनाराच २, नाराच ३, अर्ध नाराच ४, कीलको ५, छेवटो ६ एवं।

नारकी देवता में संघयण पावे नहीं।

५ थावर, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच में संघयण १ छेवटो गर्भजमनुष्य तिर्यंच में संघयण पावे, ६ छहुं ही सर्व युगलिया तेसठशला का पुरुषोंमें संघयण वज्र रिषभनाराच पावे।

सिद्धांमें संघयण पावे नहीं।

॥ इति संघयण द्वारम् ॥

॥ चौथो संठाण द्वार ॥

संस्थान ६—तेहना नाम—समचोरस १, निग्रह-

॥ १३ तेरमूं दृष्टि द्वार ॥

दृष्टि ३ सम्यक् १ मिथ्यात २ सम्ममिच्छादिट्ठि ३ एवं ३ होय।

७ नारकी, १२ बारमां देवलोक तांई देवता, गर्भज मनुषा गर्भज तिर्यंच में दृष्टि तीनूं ही होय। थावरनें, असन्नीमनुषा में, ५६ अन्तरद्वीप जुगलियानें दृष्टि १ मिथ्या दृष्टि पावे। देवतांनें, ३ विकलेन्द्रीनें असन्नी तिर्यंच ३० अकर्म भूमिका जुगलियानें दृष्टि २ मिथ्या २ पावे ५ अनुत्तर विमानका दृष्टि १ सम्यक् पावे।

॥ इति दृष्टि द्वारम् ॥

॥ १४ चौदमूं दर्शन द्वार

दर्शन ४—चक्षु १, अचक्षु २, दर्शन एवं दर्शन ४ जाणवा।

७ नारकी, सर्व देवतां
चक्षु १, अचक्षु २,
दर्शन ४ होय, ५ थावर,
१ अचक्षु पावे।

…त अ० २, ५ अनुत्तर का देवता में मिश्रानें अज्ञान …पावे नहीं।

इति अज्ञान द्वारम्।

१७ मूं योग द्वार।

योग १५-मनका ४, सत्य मन १ असत्य मन २ मिश्रमन ३ व्यवहार मन एवं ४ वचनका जोग ४-सत्य वचन १ असत्य वचन २ मिश्र वचन ३ व्यवहार वचन एवं ४। कायाका योग ७-औदारिक १ औदारिक को मिश्र २, वैक्रिय ३ वैक्रियको मिश्र ४, आहारिक ५, आहारिकको मिश्र ६, कार्मण ७, एवं। १५

७ नारकी सर्व देवता में योग पावै ११ मनका ४, वचनका ४, वैक्रिय ९ वैक्रियको मिश्र १० कार्मण ११, सर्व युगलिया में योग पावै ११ मनका ४, वचन का ४, औदारिक ९, औदारिकको मिश्र १०, कार्मण ११। पांचथावर वर्जीने, ४ स्थावर, असन्नी, मनुष्य में योग पावै ३ औदारिक औदारिकको मिश्र कार्मण। तीन विकलेंद्री, असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री, में पावै ४ औदारिक १, औदारिक मिश्र २ व्यवहार भाषा ३ कार्मण ४। वायुकायमें योग पावै ५—औदारिक १, औदारिक मिश्र २, वैक्रिय ३, वैक्रिय मिश्र

गर्भज मनुष्यां में उपयोग पावै १२ सिद्धांमें
पयोग पावै २ केवल ज्ञान १, केवल दर्शन १।

इति उपयोग द्वारम्।

१९ उगणीसमूं आहार द्वार।

उन्नीस दंडक का जीव तो छहूंही दिशाको
आहार लेवै।

पांच थावर तीन च्यार पांच छव दिशिका आहार
लेवै।

केतला मनुष्य अणआहारी पण होय, सिद्ध
भगवन्त आहार लेवै नहीं।

इति आहार द्वारम्।

२० बीसमूं उत्पत्ति द्वार।

७ नारकी, आठवां देवलोक तांई का देवता,
तेऊ, वाऊ काय, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य तिर्यंच
सर्व युगलियांमें उत्पत्ति पावै गति २ की, मनुष्य
तिर्यंच।

नवमां देवलोक से मरथार्थ सिद्धतांई का देवतामें
उत्पत्ति पावै १ मनुष्य गतिकी।

पृथ्वी अप्प
गतिकी (दकी)

की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्टी ३॥ पल्यो पमकी।

दक्षिण दिशिका ८ नो निकायका देवतां की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १॥ पल्योपम की, यांकी देव्यांकी जघन्य १० हजार वर्ष उत्कृष्टी ॥ पौण पल्योपमकी।

उत्तर दिशिका असुर कुमारांकी जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १ सागर जाझेरी यांकी देव्या की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्टी ४॥ साडा च्यार पल्योपमकी।

उत्तर दिशिका ८ निकायका देवतांकी जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी देस उणी दोय पल्योपमकी १० देव्यांकी ज० हजार वर्ष की। उत्कृष्टी देश उणी ८ पल्योपमकी।

वानव्यन्तर देवतांकी स्थिति।

जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १पल्योपमकी, यांकी देव्यांकी जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्टी ॥ आधा पल्योपमकी, त्रि म्भूनका देवांकी भी इतनी ही।

जोतषी देवांकी स्थिति।

चन्द्रमांकी जघन्य पाव पल्योपमकी उत्कृष्टी १

१६ सातमां ग्रैवेयक की ज० २८ उ० २९।

२० आठमां ग्रैवेयक की ज० २९ उ० ३०।

२१ नवमां ग्रैवेयक की ज० ३० उ० ३१।

२२ विजय १, विजयन्त २, जयन्त ३।
अपराजिता, ४ए च्यार अनुत्तर वैमानकी ज० ।
उ ३३ सागर।

२३ सरवार्थ सिद्धिका देवांकी ज० ३३ उ० ।
सागर।

अथ लोकान्तिक देवतांकी स्थिति ८ सागरं
पहिला किल्विषीकी ३ पल्य, दुजाकी १ सागर
तीजाकी १३ सागरकी।

पांच स्थावर की स्थिति ज० अन्तर मुहूर्त
उत्कृष्टी पृथ्वीकायकी २२ हजार वर्ष की, अप्काय
की ७ हजार वर्षकी, तेउकायकी ३ दिन रात
वायुकायकी ३ हजार वर्षकी वनस्पति कायकी १
हजार वर्षकी।

तीन विकलेन्द्री की ज० अन्तर मुहूर्त की उत्कृ
ष्टी बेइन्द्री की १२ वर्षकी, तेन्द्रीकी ४९ दिन
रात की, चौइन्द्री ६ महीनाकी। तिर्यंच पंचे
न्द्रीकी ज० अन्तर मुहूर्तकी उत्कृष्टी असंख्याकी।

क्रोड़ पूर्वको, थलचर सन्नीको ३ पल्योपमको असन्नीको ८४ हजार वर्ष को ; उरपुर सन्नीको क्रोड ; पूर्वको, असन्नी को ५३ हजार वर्षको; भुजपर सन्नीको क्रोड पूर्वको, असन्नी की ४२ हजार वर्ष को ; खेचर सन्नीको पल्योपम के असंख्यातमूं भाग, असन्नी की ७२ हजार वर्षको। असन्नी मनुष्यको ज० उ० अन्तर मुहूर्त्त की।

सन्नी मनुष्य की स्थिति, ज० अन्तर मुहूर्त्तकी, उ० ५ भर्त, ऐरभर्तका मनुष्यां की अवसर्पिणीके पहिलो आरो लागतां ३ पलयकी, उतरतां २ पलयकी; दूसरो लागतां २ पलयकी, उतरतां १ पलयकी; तीसरो लागतां १ पलयकी, उतरतां क्रोड़ पूर्वकी; चौथो आरो लागतां क्रोड़ पूर्वकी, उतरतां १२५ वर्ष की; पांचमूं लागतां १२५ वर्षकी, उतरतां २० वर्षकी; छट्ठो लागतां २० वर्षकी, उतरतां १६ वर्षकी। उतसर्पणी कालमें इमहिज चढ़ती कहणी, पांच महाविदेह खेत्रांकी १ क्रोड़ पूर्वको उत्कृष्टी स्थिति।

युगलियां की स्थिति :-

५ हेमवय, ५ अहणवयकां को ज० देशऊणो १ पलय उ० १ पलयकी।

ा में चवन १ मनुष्यकी सातमी नारकी में तथा तेऊ
ाऊमें चवन १ तिर्यंच गतिकी छै।

गर्भज मनुष्य तिर्यंच, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री में चवन च्यारूं ही गतिकी; युगलिया में चवन १ देव गतिकी। सिद्धांमें चवन पावे नहीं।

॥ इति चवन द्वारम् ॥

२४ मूं गतागति द्वारम्।

पहिली से छट्ठी नारकी तांई गति २ दण्डक, आगति २ दण्डकांकी मनुष्य, तिर्यंच पंचेन्द्री।

सातमीं नारकीमें आगति २ दण्डकांकी, गति तिर्यंच पंचेन्द्री की, गत जांणवी।

भुवनपति, वानव्यंतर, ज्योतिषी, पहिला दूजा देव लोक तथा पहिला किलविषी देवतांकी, आगत २ दंडकांकी (मनुष्य तिर्यंच की) गति ५ दंडकां की (तिर्यंच मनुष्य पृथ्वी अप्प वनस्पति की)

तीजा देवलोक से आठमां देवलोक तांई गता गत २ दंडकां की (मनुष्य तिर्यंच) नवमां देवलोक से सरवार्थ सिद्धि तांई गतागत १ मनुष्यकी।

पृथ्वी अप्प वनस्पति कायकी आगत २३ दण्ड-कांकी (नारकी टली) गति १०—दण्डकांकी ५

२५ सुं प्राण द्वार ।

७ नारकी सर्व देवता गर्भज मनुष्य तिर्यंच सर्व युगलिया में प्राण १० दसुंही पावे. ५ स्थावर में प्राण ४ पावे स्पर्श इन्द्रीबल १ काय २ सासोसास ३ आउषो ४ एवं ।

बेन्द्री में पावे ६. तेन्द्री में पावे ७ चौरिन्द्री में पावे ८ प्राण ।

असन्नी मनुष्य में पावे ७॥ स्वास लेवे तो उस्वास नहीं असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री में पावे ९ मन टल्यो ।

१३ में गुणठाणे पावे ५ पांच इन्द्रियांका टल्या ।

१४ में गुणठाणे पावे १ आउषोबल, सिद्धां में प्राण पावे नहीं ।

॥ इति प्राण द्वारम् ॥

२६ सुं योग द्वार ।

नारकी देवता मनुष्य सन्नीतिर्यंच युगलियामें जोग पावे ३ मन वचन काय का ।

पांच स्थावर असन्नी मनुष्य में १ कायको पावे ।

तीन विकलेन्द्री असन्नी पंचेन्द्री में जोग पावे २ वचन काया ।

कितना मनुष्य अयोगी होय, सिद्धांमें जोग पावे नहीं ।

॥ इति लघु दंडकम् ॥

१७ ,, छट्ठा देवलोक का देवता असंख्यात गुणां ।

१८ ,, चोथी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।

१९ ,, पांचवां देवलोक का देवता असंख्यात गुणां ।

२० ,, तीजी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।

२१ ,, चोथा देवलोक का देवता असंख्यात गुणां ।

२२ ,, तीजा देवलोक का देवता असंख्यात गुणां ।

२३ ,, दूजी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।

२४ ,, समूर्छम मनुष्य असंख्यात गुणां ।

२५ ,, दूजा देवलोक का देवता असंख्यात गुणां ।

२६ ,, दूजाकी देव्यां संख्यात गुणीं ।

२७ ,, पहला देवलोक का देवता संख्यात गुणां ।

२८ ,, पहलाकी देव्यां संख्यात गुणीं ।

२९ ,, भवनपति देवता असंख्यात गुणां ।

३० ,, भवनपती की देव्यां संख्यात गुणीं ।

३१ ,, पहली नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।

३२ ,, खेचर पुरुष असंख्यात गुणां ।

३३ ,, खेचरणी संख्यात गुणीं ।

३४ ,, थलचर पुरुष संख्यात गुणां ।

३५ ,, थलचरणी संख्यात गुणीं ।

३६ ,, जलचर पुरुष संख्यात गुणां ।

५७ „ बादर वायुकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणां।
५८ „ बादर तेऊकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणां।
५९ „ बादर प्रत्येक शरीरी वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणां।
६० „ बादर निगोद अपर्याप्ता असंख्यात गुणां।
६१ „ बादर पृथ्वीकाय का अपर्याप्ता असंख्यात गुणां।
६२ „ बादर अप्पकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणां।
„ बादर वायुकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणां।
६४ „ सूक्ष्म तेऊकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणां।
६५ „ सूक्ष्म पृथ्वी अपर्याप्ता विशेषाईया।
६६ „ सूक्ष्म अप्प अपर्याप्ता विशेषाईया।
६७ „ सूक्ष्म वायु अपर्याप्ता विशेषाईया।
६८ „ सूक्ष्म तेऊ पर्याप्ता संख्यात गुणां।
६९ „ सूक्ष्म पृथ्वी पर्याप्ता विशेषाईया।
„ सूक्ष्म अप्प पर्याप्ता विशेषाईया।
„ सूक्ष्म वायु पर्याप्ता विशेषाईया।
„ सूक्ष्म निगोद अपर्याप्ता असंख्यात गुणां।

७३ ,, सूक्ष्म निगोद पर्याप्ता संख्यात गुणा ।
७४ ,, अभव्य जीव अनन्त गुणा ।
७५ ,, पडवाई समदृष्टी अनन्त गुणा ।
७६ ,, सिद्ध भगवंत अनन्त गुणा ।
७७ ,, बादर वनस्पति पर्याप्ता अनन्त गुणा ।
७८ ,, बादर पर्याप्ता विशेषाईया । ।
७९ ,, बादर वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।

८० ,, बादर अपर्याप्ता विशेषाईया
८१ ,, सर्व बादर विशेषाईया ।
८२ ,, सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्ता असंख्या गुणां ।

८३ ,, सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाईया ।
८४ ,, सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्ता सख्यात गुणा ।
८५ ,, सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाईया ।
८६ ,, सर्व सूक्ष्म विशेषाईया ।
८७ ,, भव्य जीव विशेषाईया ।
८८ ,, निगोदीया विशेषाईया ।
८९ ,, वनस्पतिविशेषाईया ।
९० ,, एकेन्द्री विशेषाईया ।

९१ ,, तिर्यंच विशेषाईया ।
९२ ,, मिथ्यात्वी विशेषाईया ।
९३ ,, भवसी विशेषाईया ।
९४ ,, मध्यपाई विशेषाईया ।
९५ ,, छद्मस्थ विशेषाईया ।
९६ ,, सजोगी विशेषाईया ।
९७ ,, संसारी जीव विशेषाईया ।
९८ ,, सर्व जीव विशेषाईया ।

देवयं चेइयं पज्जुवासामी मत्थएण वंदामि
धर्म देव चित्त प्रसन्न कारी ज्ञानवंत सेवना करूं मस्तकेकरी वंद... नमस्कार क...

॥ इच्छामि पडिक्कमिउ ॥

इच्छामि पडिक्कमिउ इरिया वहीयाये
इच्छूं, वांछू प्रतिक्रमवोते निवर्त्तवो मार्गने चिपे चालतां

विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे
विराधनां हुई होय जातांआतां प्राणी बेन्द्रियादिको आक्रमण करणूं चांपणूं

बीयक्कमणे हरियक्कमणे उसा उत्तिंग पणग
बीज जीव चांपणूं हरि लीलीको चांपणूं ओसको कीड़ीका बीलण बिल फूलण

दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे
पाणी का माट्टीका जीव मकड़ीका जाला मर्दनो चांपवो

जेमे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया
मैं ज्यो जीव विराध्या होय एकेन्द्री जीव बेन्द्री जीव

तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया
तेन्द्री जीव चौरेन्द्री जीव पं...

अभि... हया वत्तिया लेसिया संघाइया
...ता धूल्यां पूंज्यां ढक्या ... ...

पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अङ्गस'चालेहिं
पित्तकर मूर्च्छा सुक्षमपणे शरीरको हालयो
सुहुमेहिं खेलस'चालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिस'चालेहिं
सुक्षमपणें श्लेष्मको संचार सुक्षम दृष्टी चलावो
एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहीउ
इत्यादिक यह म्हारे आगारसें ध्यान भागे नहीं विराधना नहीं
हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहं
होज्यो मनें काउस्सगतेध्यान जिहां तक अरि
ताणं भगवंताणं नमुक्कारेण नपारेमि
हन्त भगवन्तने नमस्कार करीने नहीं पारूं
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं
तहातांई शरीरसें स्थानसें मोनकरी ध्यानकरी
अप्पाणं वोसरामि ॥ इति ।
आतमां ने पापकी वोसराऊं

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोयगरे धम्म तित्थयरेजिणे
लोक के विषे उद्योतकारी धर्म तीर्थकरता जिन
अरिहन्ते कित्तइस्सं चउवीस'पि केवली ॥१॥
अरिहन्ताको कीरति करूं चोवीस पे केवली

सोयं तु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया जे ये
सनपावो कीर्त्तिकरी वंद्या मोटा प्रते ते ये
पूज्य थाया

लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभ
लोकके विषे उत्तम सिद्ध छे रोग रहित समकित
बोध लाभ

समाहि वर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मल
समाधि प्रधान उत्तम देवो चंद्रमांथी निर्मल
यरा आइच्चेसु अहियं पयासयारा सागर वर
कारी सूर्यथी अधिक प्रकाश कारी समुद्र समान
गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥
गंभीरा एहवा सिद्ध सिद्धि मने देवो

॥ अथ नमुत्थुणं ॥

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं
नमस्कार थाओ अरिहंत भगवन्त ने धर्म नी शरू
करता

तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं
तीर्थ करता बिना गुरु पोते प्रति पुरुषों में उत्त
बोध पाम्या

पुरिस सिंहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिस
पुरुषों में सिंह समान पुरुषों में पुंडरीक पुरुषों
कमल समान

मक्खय मव्वाबाह मपुणरावत्ती सिद्धगई
अक्षय अव्याबाधि फेरूं आवे नहीं इसी सिद्धगति
नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं। इति ॥
नामवाला स्थान प्राप्त हुवा जिनेस्वरानें नमस्कार थावो

॥ प्रतिक्रमण ॥

आवस्सही इच्छामियं भंते तुबभहि—मब्भणु
अवश्य इच्छू छू मैं हे भगवान तुम्हारी आज्ञासे
नाविसमाणे देवसी पडिक्कमणं ठाएमि देवसी
दिवस प्रतिक्रमण ठाऊं करूं मैं दिवस
सम्बन्धी सम्बन्धी
ज्ञान दर्शन चारित तप अतिचार चिंतवनार्थं
ज्ञान दर्शन चारित्र तप अतिचार चिन्तवना के अरथे
करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥
करूं छूं मैं काउसग ते ध्यान

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउ अई
इच्छूं छूं ठाऊं काउसग ज्यो मैं दिवसनें अति
यारो कउ काईउ वाईउ माणसिउ उस्सुत्तो
चार कीनों शरीरसें वचन सें मनसें भूंडा सूत्र
उमग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाउ दुव्वी
उन मार्ग अकल्पनीक नहीं करवा जोग दुरध्यान खोटो
चिंतिउ अणायारो अणिच्छियव्वो
चिन्तवना अणाचार नहीं इछवा जोग

वुतां ज्ञानकी ज्ञानवंतकी आसातना करी होय तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥

तए श्रीसमकित अर्हंतो महदेवो जावज्जीवं
सरधना ते समकित तेह अरिहन्त मांहरे जाव जीव-
दर्शन देव लग

साहुणो गुरुणो जिणपन्नतं तत्तं इयसम्मत्त'
इ साधू गुरु जिन प्ररूप्यो ते धर्म तत्व यह समिकत

ए गहियं ।
ग्रहणकियो ।

ऐहवासमकितने विषे जे कोई अतिचार लाग्या होय ते आलोऊं, जिन वचन सांचा न सरध्या होय १, न प्रतीत्याहोय २, न रुच्या होय ३ पर पाखण्डीकी प्रशंसाकरी होय ४, सास्तो परिचय कीधो होय ५, समकित रूपी रत्न ऊपरे मिथ्यात्व रूप रज मैल खेह लागी होय तस्समिच्छामि दुक्कड़ं ।

अथ बारह व्रत।

पढ़मे अणुव्वए थूलाउ पाणाइवायाउ
प्रथम देशथी व्रत मोटा को प्रणातिपात को

वेरमणं व्रत पांच बोले करी ओलखीजे, द्रव्यथकी
नवर्तवो व्रत

।धी होय ३ पराया नाता विवाह जोड्या होय ४
।म भोग तीव्र अभिलाषासे सेया होय ५
तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ इति ॥

थमे अणुव्वए थूलाउ परिग्गहाउ विरमिणं
वमूं अणुव्रत स्थूलथकी परिग्रहते धनको निवर्त्तवो
ाचां खेत्तंवत्थु खेत्रवत्थुंनि द्रव्यथकी खेत्त
उघाड़ी जमीन
त्थु यथा प्रमाण, धन धान यथा प्रमाण
कां जमीन जेह प्रमाण कीधो, द्रव्य नाजों जेह प्रमाण कीधो;
ुप्पी धातु यथा प्रमाण, हिरण सुवन्न यथा प्रमाण
तांबो पीतल लोहादिना चांदी सोनाकोजे प्रमाण कीधो;
जेह प्रमाण कीधो,

द्विपद चउप्पद यथा प्रमाण।
ासदासी हाथी घोड़ा दिक चोपद जे प्रमाण कीधो;

द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, खेत्रथकी सर्व खेत्रांमें, कालथकी जावज्जीव लगे, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हारा पांचमां अणु व्रतमें ज्यो अतिचार लागा होव ते आलोऊं, खेत वत्थु रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय १ हिरण्य सुवर्णरो प्रमाण अतिक्रम्यु होव

भाड़े ते फिराया   लूपादि कर्म   दांतको विणज

ईया का कर्म   ने नारेल सुपारी   ते व्योपार

पत्थर आदि फोड़्यो

लक्खवाणिज्जे ७   रस वाणिज्जे ८   केसवाणिज्जे ६

लाखको वाणिज्य   रस व्यापार ते   बाल चमरादि

घी. तेल सहतादि   व्योपार

विषवाणिज्जे १०   जन्त पिलणयां कम्मे ११

जहरको व्यापार   कल घाणी प्रमुख   कर्म

नलञ्छणियां कम्मे १२ दवग्गिदावणियां कम्मे १३

कलो वधियादि कर्म ते   दावानलदेवो कर्म ते

जानवरांनें वाधो कर्म   वनप्रमुखनेंलायलगायवो

सर द्रह तालाव सोसणियां कम्मे १४ असईजण

सरोवर द्रह तलाव आदि ने सोषायो ते कर्म असती ते असंज्ञती जननें

पोषणियां कम्मे १५ । इति ॥

पोस्या नो कर्म

ए पंदरह कर्मादान आगार उपरान्त सेया सेवाया होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।   । इति ।

आठमूं अनर्थ दंड विरमण व्रत पांचा बोलां पोतखिजे, दुवायको अवज्झाणचरियं १

मूंडा ध्यान नो आचरवो

पमायचरियं २ हंसपयाणं ३ पाव कम्मोवएसं ४

प्रमाद करवो   प्राण हिंसा   पाप कर्म को उपदेश

अधिका भोग्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं
मर्यादा उपरान्त अधिक भोग्या होय तो मिच्छामि दुक्कड़ं

॥ इति ॥

नवमो समायक व्रत पांचां बोला बोलखिज्जे
करेमि भन्ते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चखामि
करूं छूं मैं हे भगवन्त सामायक सावद्य जोग पचूखाण
जाव नियमं (मुहूर्त्त एक) पज्जुवासामि दुविहेण
यावत नियम एक मुहूर्त ते दोय घड़ी सेऊं छूं दोय करणसें
तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मनसा वायसा
तीन जोगसें, सावद्य नहीं करूं नहीं कराऊं मनसें वचन से
कायसा तस्सभंते पड़िक्कमामि निन्दामि गरिहामि
शरीरसें तिणसूं हे भगवान पडिकमूं छूं निन्दूं छूं गर्हणा ते निंदूं छूं
अप्पाणं वोसरामि ॥
पाप से आत्मांने वोसराऊं छूं

द्रव्यथकी कनेराख्या ते द्रव्य, खेत्रथकी सर्व खेत्रमें, कालथकी एक मुहूर्त्त तांई, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्ज्जरा, एहवा नवमां व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं

द्रव्यथकी एहिज कलपतो द्रव्य, खेतथकी कलपे जिण खेतमें; कालथकी कलपे जिण काल में, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा अग्यारा वारमां व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोऊं सूजती वस्तु सचित्त पर मेली होय १ . सचित्तथी ढांकी होय २ काल अतिक्रम्यो होय ३ आपणी वस्तु पारकी पारकी वस्तु आपणी कीधी होय ४ भाणे बैठ साधू साध्वियांकी भावनां नहीं भाई होय तहनूं मिच्छामि दुक्कड़ं ।

॥ इति ॥

अथ संलेखणा की पाटी ।

इह लोगा संसइ प्पउगो १ परलोगासंसइ
यह लोकको जसको तथा पर लोकमें सुखको
द्रव्यादि की इच्छा

प्पउगो २ जीविया संसइ प्पउगो ३ मरणा संसइ
वांच्छा जीवित की इच्छा मरण की

पउगो ४ काम भोगा संसइप्पउगो ५ मा मू
इच्छा काम भोगकी इच्छा उपरोक्त अतिचार

ज्झहुज्ज मरणान्ते ।
मुझमें
मर्यान्त तक मत होउयो । ॥ इति ॥

इच्छामि ठामि आलोउ जो मे देवसी अइयारोकउ
ए पाटी कहणी।

एक नवकार कह पारलेणो।

॥ इति प्रथम आवसग्ग समाप्त ॥

☉ दूसरा आवस्सगकी आज्ञा ☉

लोगस्सकी पाटी।

॥ इति दूजो आवस्सग समाप्त॥

☉ तीजा आवस्सगकी आज्ञा ☉

दोय खमा समणां कहणा।

॥ इति तीजा आवस्सग समाप्त ॥

☉ चौथा आवस्सगकी आज्ञा ☉

काउसग्गमें ध्यानमें कह्या सो प्रगट कहणा।

८ आठ पाटी बैठायकां कहणी जिणांकी विगत

१ तस्स सव्वस्सकी पाटी।
२ एक नवकार।
३ करेमि भंते सामाइयं की पाटी
४ चत्तारि मंगलकी पाटी।
५ इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी।
६ इच्छामि ठामी आलोउ जो मे देवस्सी।
७ आगमे तिविहे की पाटी।
८ दंसण श्री समत्तेकी पाटी।

ध्यान पारी लोगसको पाटी प्रगट कहणी ।

२ दोय खमासमणां कहणां ।

॥ इति पंचमूं आवस्सग समाप्त ॥

छट्टा आवसग्गकी आज्ञा लेई कहणा तेहनो विगत।

गयेकालनूं पडिक्कमणो, वर्तमान कालमें समता, आगामियां कालका पचखाण यथा शक्ति करणां।

सामाई १ चौवीस्थो २ वंदना ३ पडिक्कमणो ४ काउसग्ग ५ पचखाण ६ यां छऊं आवसग्गा में ऊंचो नीचो ओछो अधिक पाटो कह्यो होय तस्स मिच्छामि दोक्कडं ।

दोय नमोत्थुणं कहणां जिणनें पहिला स तो सिद्धगई' नाम धेईयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं

दूजा नमोत्थुणं नें सिद्धगई नाम धेईयं ठाणं संपवेकामो नमो जिणाणं ।

॥ इति ॥

※ तेरापन्थ ओलखणां को ढाल ।

पाप हवे नहीं प्राधकूं नहीं कहिनें छुड़ावे जी छतानें भलो न चिन्तवै, ऐसी दया पलावै जी सोही तेरापंथ पावै जी ॥ १ ॥ छि तो मूंन रही रहै, छि निर्वद्य भावे छे, साधक ज्ञान संसारका, तेतो चित्तमें न चाहवे छै ॥ सो ॥ २ ॥ साध्यां कि

हो, दान कुपातरनें दियां, देता आडा न आवे हो ॥ सो ॥ १२ ॥ बरजयां तो जिहां हो रह्या मुनि वहिरण जावे हो, देखत मुगत फकीर कों तो पाछाफिर आवे हो ॥ सो ॥ १३ ॥ नव तत्व निर्णय नित करै, समकित नें सरधावे हो, मुक्ति नगर मुसकिल घणीं, तिणरो मार्ग बतावे हो ॥ सो ॥ १४ ॥ तेरा वचन बिमासनें सूतर सीख सिखावे हो, तिण वयणांसूं भर्तमें, भविअण को चलावे हो ॥ सो ॥ १५ आपे समकित औषधी, वैद्य भोजन पचावे हो, तेरापंथी वैद ज्यों, धर्म भोजन रूचावे हो ॥ सो ॥ १६ ॥ मैल खोट प्रते काढ़वा, सोनी सोनो तावे हो, ज्यूं तेरापंथी परखियां, हृदय न्याय ल्यावे हो ॥ सो ॥ १७ ॥ तेरापंथ ओलख्यां पाछे दूजो दाय न आवे हो घ्रत भोजन जीमियां कूकस कुण खावे हो ॥ सो ॥ १८ ॥ कहे कथादिवारता, सूत्तर सें मिलावे हो, तुझ वचनांसि नहीं मिले ताकूं तुरत उडावे हो ॥ सो ॥ १९ ॥ सूत्र न्याय पाखण्डभर्यो, भीखणजी ओलखावे हो, तेरापंथ तें धारियो, दया धर्म बतावे हो ॥ सो ॥ २० ॥ भीखणजी तेरापंथी, तिणमें ७ गुणपावे हो, प्रभु तेरापंथरा, [illegible] गुण गावे हो ॥ सो ॥ २१ ॥

व लेवे तायजी, त्यांरो पार वेगो नहीं पायजी ।
। १२ ॥

कुक्षायरे अशुभ उदय हुआ, ते पामें, एकरसूं
त, जे साधू पड़िया नर्क निगोद में, सेवकांने
जावे सायजी, त्यां मानी कुगुरां री वातजी, किनी
त स्थावरनीं घातजी, अनन्ता काल दुःखमें जातजी,
नें पण कुगुरां डबोया साख्यातजी । श्री वीर
१३ ॥

गुरांने डबोया श्रावका श्रावकानें डबोया साध,
ोनूं पड़िया नर्क निगोद में, श्री जिनवर धर्म विरा-
धजी, संसार समुद्र अगाधजी जिन धर्मरी रहस नहीं
लाधजी, भव भवमें पामें असमाधजी, ए पण कुगुरां
तेणीं प्रसादजी ॥ श्री ॥ १४ ॥

अशुद्ध जाणी देवे साधूनें ते साधानें लूटी लिया
ताणाय, पाप उदय हुवे इण भवे, दुःख दारिद्र
अवे घर मांणायजी ऋद्ध सम्पति जावे विलायजी,
दुःख मांहि दिन जायगी, कदा पुन्य भारी हुवे
तायजी, तो पर भवमें शंका नहीं कायजी ॥ श्री
वीर ॥ १५ ॥

इम सांभल नर नारियांजी, कीज्यो मनमें विचार
शुद्ध साधांने जाणनेंजी, अशुद्ध मत दीज्यो किण-

॥ ४ ॥ चाकर तुम चरणांरी चाकर देवइ रषि सुख साजे छे, गुलाब करे ए भैरवी रागे गुणयुत जिन सुपसाजे छे ॥ थोकाल ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ कलश ॥

इम ध्यान धरता करै करावै पाप परचा पर हरै। श्री भविक समकित रतन पामैं श्रातम गुण उज्वल करै॥ श्रीकालू गवी गुण सागरु वुद्धि श्रागरु सारां सिरे। करै गुलाब श्रावक भावन भावक शिव रमणी वरीश्वरै ॥ १ ॥

अथ गतागतका थोकड़ा ।

जीवरा ५६३ भेदकी विगत ।

१४ सात नारकी का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

४८ तिर्यंचका ।

४ सूक्ष्म बादर पृथ्वीकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता ।
४ सूक्ष्म बादर अप्पकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता ।
४ सूक्ष्म बादर वाउकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता ।
४ सूक्ष्म बादर तेउ कायका पर्याप्ता अपर्याप्ता ।
६ सूक्ष्म (बादर) प्रत्येक साधारण वनस्पतिका पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

धातकी खंड में पावै १०२—

५४ मनुष्य का अठारह क्षेत्रों का त्रिगुणा, ४८ तिर्यंचका

कालोदधि में पावै—४६—

तिर्यंचका ४८ में से बादर तेउका २ टल्या

अर्धं पुष्कर वर द्वीप में पावै १०२—

धातकी खंडवत् जाणवो।

ऊंचा लोक में पावै १२२—

७६ देवताका।

४६ तिर्यंचका।

नीचालोक में पावै ११५—

भवनपति २०, परमाधामी ३०, नारकी १४, तिर्यंचका ४८,

मनुष्यका ३ सर्व ११५।

तिर्छा लोक में पावै ४२३—

३०३ मनुष्यका।

४८ तिर्यंच का।

३२ वाणव्यन्तर का।

२० त्रिजृम्भका।

२० ज्योतिषी का।

१९	असन्नी मनुष्य में	आगति १७१	लड़ीका में से तेउ वाउ का ८ टल्या
		गति १७९	लड़ीका
२०	सन्नी मनुष्य में	आगति २७६	१७१ तो लड़ीका में से, ९९ देवता ६ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२१	देवकुरु उत्तर कुरु का जुगलिया में	आगति २०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच
		गति १२८	१० भवनपति, १५ परमाधामी, १६ वाणव्यंतर, १० त्रिजृम्भका, १० जोतषी, २ पहिलो दूजोदेवलोक, १ पहलो किल्विषिक एवं ६४का पर्याप्ता अपर्याप्ता
२२	हरीवास रम्यकवास का जुगलियां में	आगति २०	ऊपरवत्
		गति १२६	६३ जातिका देवतां में से १ पहिलो किल्विषिक टल्यो
२३	हेमवय अरुपवय का जुगलियां में	आगति २०	ऊपरवत्
		गति १२४	६४ जातिका देवतांमें किल्विषिक १ और दूजो देवलोक टल्यो
५६	अन्तरद्वीप जुगलियां	आगति २१	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी, ५ असन्नी, तिर्यंच

३१	मिथ्या दृष्टि में	आगति ३७१	१७१ लड़ीका, ६६ देवता, ८६ युगलिया, नारकी ७ एवं
		गति ५५३	५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता टल्या
३२	सम्मिथ्या दृष्टि में	आगति ३६३	समदृष्टि जिम
		गति ०	तीजे गुणठाणें मरे नहीं
३३	साधु में	आगति २७५	१७१ लड़ीका ६६ देवता, ५ नारकी
		गति ७०	१२ देवलोक, ९ लोकान्तिक, ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तरका पर्याप्ता अपर्याप्ता
३४	श्रावक में	आगति २७६	१७१ लड़ीका ६६ देवता, ६ नारकी एवं
		गति ४२	१२ देवलोक, ९ लोकान्तिक, पर्याप्ता अपर्याप्ता
३५	पुरुष वेद में	आगति ३७१	मिथ्यातो जिमजाणवो
		गति ५६३	सर्व
३६	स्त्री वेद में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६१	सातमी नरक में नहीं जाय
३७	नपुंसक वेदमें	आगति २८५	६६ देवता, १७६ लड़ीका, ७ नारकी
		गति	

१९	तैजस कारमाण में	आगति ३३१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व
२०	वैक्रे शरीर मूलका में	आगति १११	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी ५ असन्नी
		गति ४६	१५ कर्म भूमि ५ सन्नी ५ असन्नी तिर्यंच, पृथ्वी १ पानी २ वनस्पति ६ ए २३ का पर्याप्ता अपर्याप्ता सूक्ष्म साधारण विना
२१	उत्तरवैक्रे शरीर में	आगति ३३१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व
२२	औदारिक शरीर में	आगति २८५	१७९ लड़ोका, ९९ देवता, ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२३	कृष्ण लेश्याको कृष्ण लेश्याने आवे तो	आगति ३११	१७१ लड़ोका, ५१ जाति का देवता ८६ युगलिया ३ नारकी पांचवी छठी सातवी
		गति ४५६	५१ जातिका देवता ८६ युगलिया ३ नारकी. इनका पर्याप्ता अपर्याप्ता २८० लड़ोका १७६ सर्व ४५६
२४	नील लेश्या को नीलमें आवे तो	आगति ३११	१७१ लड़ोका, ५१ देवता. ८६ युगलिया ३ नारकी तीजी चौथी पांचवी
		गति ४५६	ऊपरवत् (नारकी तीजी चौथी पांचवी)

यह मानी हुई बात है कि मनुष्य के लिये मनोरञ्जन भी एक आवश्यक वस्तु
मनुष्य मात्र किसी न किसी रूपमें मनोरंजन चाहता है इसमें सन्देह नहीं।
रुचि भिन्नता के कारण, ऐसी बहुत ही कम वस्तुएं हैं जो सबका मनोरञ्जन
में समर्थ हों। जो वस्तु एक को मनोरंजक प्रतीत होती है, तो दूसरे को
। किन्तु कविता एक ऐसी वस्तु है जो सबका मन एकसा आकर्षित कर
ती है चाहे वे उसका मर्म समझें या नहीं पर शब्द लालित्य और भावकी
ता उनको अपनी ओर आकर्षित किये बिना नहीं रहती। कविता का एक
सा पद श्रोताओं में जितना अधिक प्रभाव उत्पन्न कर सकता है उतना किसी
[illegible] विद्वान वक्ता का व्याख्यान नहीं।

प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दीके आदि कवि चन्द बरदाई से लेकर वर्तमान तकके
[illegible] कवियों की चुनी हुई अनूठी भाव पूर्ण उत्तमोत्तम कविताओं का ऐसा अपूर्व
संग्रह है जो कि प्रायः सभी प्रकार की रुचिवाले पाठकों के लिये एक सा
[illegible]कर मनोरञ्जक एवं शिक्षाप्रद है। अन्तमें ५४ पृष्ठोंका साहित्य-कुञ्ज दिया गया
जिसको पढ़कर चित्त प्रसन्न हो जाता है। कवितायें ऐसी ऐसी चुनकर दी
गी हैं कि पढ़ते ही चित्त पर असर कर जाती हैं तथा साधारण से साधारण
[illegible]ुष्य के समझ में अच्छी तरह आजाती हैं। कितने ही प्रसिद्ध जैन कवियों की
[illegible]विता तो पढ़ते ही बनती है। कंठस्थ कर लेने से साधारण आदमी भी सभा
[illegible]तुर गिना जाने लगता है। यह हम जोर के साथ कह सकते हैं कि इतना बड़ा
[illegible]ग्रह इसके पहले प्रकाशित नहीं हुआ जिसमें कि ८०० वर्ष के कवियों की कविता
[illegible]क ही पुस्तक में मिल सकें।

यदि आपको कविता से कुछ भी प्रेम हो और सैकड़ों कविता पुस्तकों के
[illegible] को एक ओर रखकर एक ही पुस्तक से अपनी इच्छा की पूर्ति करना चाहते
हो तथा मनोरञ्जन के साथ साथ शिक्षा प्राप्ति की भी कामना हो, तो इस पुस्त[illegible]
को अवश्य [illegible] मूल्य सजिल्द ३) रुपया। डाक महसूल अलग।

मिलनेका पता—ओसवाल प्रेस।
[illegible]ग स्ट्रीट, ([illegible]) क[illegible]